केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण
सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406
भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :45 अंक 288 रविवार 12 मई 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

उत्साह के साथ मनाया गया मातृ दिवस

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। शनिवार को जी. वी.एम कान्वेंट स्कूल के परिसर में मदर्स डे (मातृ दिवस) बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया । इसमें सैकड़ो की संख्या में बच्चे एवं उनकी माताओ ने प्रतिभाग किया । इस अवसर पर बच्चों ने अपनी अपनी माता के साथ डांस किया एवं अपने द्वारा कलर किया गया कार्ड उपहार स्वरूप दिया। विद्यालय के प्रबंधक संतोष सिंह एवं प्रधानाचार्या श्रीमती विजय लक्ष्मी सिंह जी ने इस कार्यक्रम का निरीक्षण किया। प्रबंधक संतोष सिंह ने कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चा अपने जीवन में पहला शब्द मां बोलता है। जो की मां एवं उनके बच्चे की अटूट प्रेम की शुरुआत है, और यह जीवन पर्यन्त चलती रहती है।

यही प्रेम एवं समर्पण को दर्शाते हुए मदर्स डे मनाया जाता है और जी. वी. एम स्कूल इस अटूट प्रेम के बंधन को और मजबूत करने का प्रयास करता है। इस अवसर पर विद्यालय की अध्यापिका रुबीना, ममता शीतल हिना अनीता रागिनी शिवानी आदि अध्यापिकाएं उपस्थिति रही।

छात्रा ने मुख्यमंत्री से लगाया न्याय की गुहार

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। कोतवाली थानाक्षेत्र के कांशीराम आवास की रहने वाली कक्षा नौ की छात्रा ने सीएम से न्याय की गुहार लगाई है। छात्रा का कहना है कि विरोधी बार–बार उसके घर पर चढ़ाई कर मार–पीटकर रहे हैं। पहली मई को रात में उसे, उसके माता–पिता को मारा पीटा गया। गंभीर चोट आने के कारण उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। पिता व मां को भी गंभीर चोट आई है।

विरोधियों का खौफ इतना है कि कोई भी बीच–बचाव की हिम्मत नहीं कर पा रहा है। इससे पहले भी उक्त लोगों ने घर में घुसकर उसके कपड़े फाड़ डाले थे और दुष्कर्म का प्रयास किया था। उसके परिवार की जान को खतरा बना हुआ है। आरोपियों के खिलाफ अगर सख्त कार्रवाई नहीं हुई तो परिवार के साथ कोई भी अनहोनी हो सकती है। पुलिस ने प्रकरण की जांच शुरू कर दी है।

अवैध रूप से निकाला गया रेल टिकट बरामद

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। व्यक्तिगत यूजर आईडी के सहारे रेल टिकट बनाकर अधिक मूल्य पर बेचने का गोरखधंधा करने वाला आरपीएफ के हत्थे चढ़ा। आरपीएफ ने उसके विरुद्ध रेल अधिनियम का मुकदमा दर्ज किया।

आरपीएफ बस्ती प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार मिश्र,उप निरीक्षक सुनील कुमार कसाना ने मयफोर्स पैकोलिया थाना क्षेत्र के मरवटिया बाजार में स्थित एस के एंटरप्राइजेज की दुकान में छापेमारी की। दुकान के संचालक सिराज अहमद पुत्र स्व. अनवर अली को गिरफ्तार किया। दुकान से अलग–अलग व्यक्तिगत यूजर आईडी पर रेल टिकट तैयार करना व ग्राहकों से 800 रुपए से अधिक मूल्य लेकर बेचने का मामला सामने आया। टीम ने 65836 रुपए के अवैध रूप से निकले गए रेल टिकट बरामद किए।

साथ ही मौके से एक अदद मोबाइल,दो अदद लैपटॉप व एक अदद प्रिंटर भी बरामद किया। पकड़े गए आरोपी के विरुद्ध आरपीएफ बस्ती ने मुकदमा अपराध संख्या 217६ 24 की धारा 143 रेल अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर विवेचना आरपीएफ चौकी प्रभारी बभनान विश्वामित्र यादव को सौंप दी है।

कांग्रेस, 50 सीट भी नहीं जीत पाएगी- मोदी

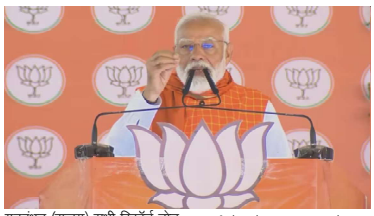

नई दिल्ली (आभा)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को दावा किया कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस 50 सीट भी नहीं जीत पाएगी और चुनाव के बाद उसे विपक्षी दल का दर्जा भी नहीं मिलेगा। कंधमाल, बोलंगीर और बारगढ़ लोकसभा सीट पर चुनावी रैलियों को संबोधित करते हुए मोदी ने दावा किया कि ओडिशा की 'अस्मिता' खतरे में है और भाजपा इसकी रक्षा करेगी। उन्होंने कहा कि राज्य में भाजपा की 'डबल इंजन' सरकार बनेगी और ओडिशा में भाजपा सरकार का मुख्यमंत्री वही बेटी या बेटा बनेगा जो उड़िया भाषा और उड़िया संस्कृति को समझता हो। बीजू जनता दल (बीजद) पर हमला करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य में प्रचुर प्राकृतिक संसाधन होने के बावजूद लोगों को गरीब बनाए रखने के लिए जिम्मेदार लोगों को सत्ता से बाहर किया जाना चाहिए। मोदी ने दावा किया, श्कांग्रेस को लोकसभा में प्रमुख विपक्षी दल बनने के लिए 10 प्रतिशत सीट नहीं मिल पाएंगी और वह 50 सीट भी नहीं जीत पाएगी।श्

राहुल गांधी पर हमला करते हुए उन्होंने कहा, 'कांग्रेस के श्शहजादे' 2014 के चुनाव के बाद से वही स्क्रिप्ट पढ़ रहे हैं...मेरे शब्दों पर ध्यान दें, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सभी रिकॉर्ड तोड़ देगा और इस बार 400 से अधिक सीट जीतेगा।' केंद्र में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली पूर्ववर्ती भाजपा सरकार की उपलब्धियों को याद करते हुए उन्होंने कहा कि 26 साल पहले आज ही के दिन पोखरण परीक्षण ने दुनिया भर में देश का कद बढ़ाया था। मोदी ने आरोप लगाया, 'कांग्रेस हमेशा भारत के लोगों को डराने की कोशिश करती है... इसी प्रवृत्ति के कारण जम्मू–कश्मीर इतने वर्षों तक आतंकवाद का गवाह बना। कांग्रेस आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब देने के बजाय पार्टी का वोट बैंक बचाने के लिए उनसे बातचीत करती थी।'

उन्होंने कहा, 'दूसरी ओर, वाजपेयी सरकार ने दुनिया को दिखाया कि भारत अपनी सुरक्षा कैसे सुनिश्चित कर सकता है। प्रवासी भारतीयों को उस क्षण (पोखरण परीक्षण) पर गर्व महसूस हुआ...जिस दिन भारत ने दुनिया को अपनी क्षमता दिखाई।' मोदी ने दावा किया कि कांग्रेस हमेशा सावधानी से कार्रवाई करने की चेतावनी देती है क्योंकि पाकिस्तान के पास भी परमाणु हथियार हैं। उन्होंने दावा किया, 'इन डरे हुए लोगों (कांग्रेस) ने हमारे देश की जनता के उत्साह को खत्म कर दिया है। आज पाकिस्तान ऐसी स्थिति में है कि वह अपने पास मौजूद बम को संभाल नहीं पा रहा है। वे अब अपने बम बेचने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन उन्हें खरीदार नहीं मिल रहे हैं क्योंकि लोगों को पता है कि उनके बम खराब गुणवत्ता के हैं।'

प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि उनकी सरकार ने अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण कराकर लोगों का 500 वर्षों का इंतजार समाप्त किया है। उन्होंने कहा, 'राम मंदिर के दर्शन करने के बाद हर कोई गर्व महसूस करता है। हमारे पास एक तरफ रामलला का आशीर्वाद है और दूसरी तरफ भगवान जगन्नाथ का।' मोदी ने जोर देकर कहा कि भाजपा ओडिया भाषा और संस्कृति के विकास के लिए पूरी तरह समर्पित है। उन्होंने बीजद नेता वी.के. पांडियन के इस दावे पर भी निशाना साधा कि वह मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के सभी मूल्यों के स्वाभाविक उत्तराधिकारी हैं।

चौथे चरण का प्रचार थमा, यूपी की 13 सीटों पर मतदान 13 को

लखनऊ (आभा)। यूपी में चौथे चरण के मतदान के लिए चुनाव प्रचार शनिवार शाम से थम गया। इस चरण में यूपी की 13 सीटों के लिए 13 मई को वोट पड़ने हैं। प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव के चौथे चरण की 13 सीटों और ददरौल विधानसभा उप चुनाव के लिए पोलिंग पार्टियां रविवार को रवाना होंगी। चौथे चरण का मतदान सोमवार को होगा। पोलिंग पार्टियों के रवाना होने से पहले सभी को हीट स्ट्रोक से बचने के साथ–साथ मेडिकल किट दी जाएगी।

चौथे चरण में प्रदेश की 13 लोकसभा सीटों शाहजहांपुर (अजा), खीरी, धौरहरा, सीतापुर, हरदोई(अजा), मिश्रिख (अजा), उन्नाव, फर्रूखाबाद, इटावा (अजा), कन्नौज, कानपुर, अकबरपुर, बहराइच (अजा) में मतदान होगा। ददरौल विधानसभा शाहजहांपुर जनपद में आता है। उन्होंने बताया कि चतुर्थ चरण के लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों से सम्बन्धित सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को मतदान केन्द्रों और पोलिंग बूथों पर मतदाताओं एवं मतदान कर्मियों के लिए जरूरी सुविधाएं मुहैय्या कराने के निर्देश दिए गए हैं।

प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि अब तक 415.38 करोड़ की शराब, ड्रग, बहुमूल्य धातुएं व नकदी आदि जब्त किए गए। इसमें 33.62 करोड़ कैश, 51.13 करोड़ की शराब, 231. 30 करोड़ की ड्रग और 22.70 करोड़ की बहुमूल्य धातुएं आदि हैं। दस मई को 25.67 लाख रुपये कैश, 41. 20 लाख रुपये शराब, 68.92 लाख की ड्रग प्रमुख जब्ती रही। सघन जांच के लिए 464 अंतर्राज्यीय चेक पोस्ट और 1730 चेक पोस्ट राज्य के भीतर संचालित हैं। 16 मार्च से 10 मई तक अपराधिक व्यक्तियों के 536 लाइसेंसी शस्त्र जब्त किए गए। 4709 लाइसेंसी शस्त्रों के लाइसेंस निरस्त कर जमा कराए गए। शांति भंग की आशंका में 27,29,805 लोगों को पाबन्द करने के लिए नोटिस भेजे गए हैं। इनमें से 24,75,827 लोगों को पाबन्द किया जा चुका है।

इसी तरह अब तक सार्वजनिक एवं निजी स्थानों से कुल 1.52 करोड़ प्रचार–प्रसार सामग्री हटाई गई। इसमें सार्वजनिक स्थानों से 93,71,966 तथा निजी स्थानों से 58,61,894 प्रचार–प्रसार सामग्री हटाई गई।

बीईओ ने किया बाल वाटिका कक्ष का उद्घाटन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। स्थानीय हर्रैया विकाखखण्ड के प्राथमिक विद्यालय गजियापुर में शनिवार को खण्ड शिक्षा अधिकारी बड़कऊ वर्मा तथा ग्राम प्रधान द्वारा स्कूल रीडीनेस कार्यक्रम के अंतर्गत बाल वाटिका कक्ष का उद्घाटन फीता काटकर किया गया। सभी अतिथियों का विद्यालय के प्रधानाध्यापक जितेंद्र कुमार, शिक्षिका एकता सिंह, मधु सिंह द्वारा माल्यार्पण, पुष्पगुच्छ देकर तथा बैज लगाकर स्वागत किया गया। विद्यालय की छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अतिथियों ने कहा कि परिषदीय विद्यालयों में छोटे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए टीएलएम, पोस्टर एवं अन्य गतिविधियां संचालित करने के लिए बाल वाटिका का निर्माण किया जा रहा है। इसके तहत रेडीनेस कार्यक्रम के जरिए बच्चों की बौद्धिक क्षमता के अनुसार उन्हें शिक्षा दी जाएगी। गतिविधियों के माध्यम छोटे बच्चों को आसानी पाठ्यक्रम सिखाया जा सकता है। संचालन डॉ योगेश सिंह ने किया। इस अवसर पर ग्राम प्रधान रामू यादव, संजीत सिंह, एआरपी गिरिजेश बहादुर सिंह, संदीप सिंह, सुनील बौद्ध, शिक्षक संघ के अध्यक्ष रामसागर वर्मा, मंत्री रामप्यारे कनौजिया, सत्यराम वर्मा, रवीश कुमार मिश्र, आदित्य सिंह, अमित पाण्डेय, शोभाराम वर्मा, रामनरेंद्र वर्मा, देवी प्रसाद पाण्डेय, राम सहाय, धनपता पाण्डेय, सत्यवती सिंह, आरती देवी आदि उपस्थित रहे।

आतंकवाद की नाभी पर प्रहार किया–योगी

कानपुर (आभा)। भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में जनसभा करने पहुंचे सीएम योगी आदित्यनाथ ने विपक्ष पर करारा प्रहार किया। सीएम योगी ने कहा, अगर इंडिया गठबंधन सत्ता में आता है तो देश में एक बार फिर आतंकवाद और नक्सलवाद का दौर शुरू हो जाएगा। उन्होंने कांग्रेस को निशाने पर लेते हुए कहा कि संविधान संशोधन का डर फैलाने वाली कांग्रेस ने सबसे पहले भारतीय संविधान में संशोधन करते हुए अभिव्यक्ति की आजादी को रौंदने का कार्य किया था। मुख्यमंत्री ने समाजवादी पार्टी पर सीधा हमला बोलते हुए कहा कि सपा के एजेंडे में अयोध्या का विकास नहीं, बल्कि अयोध्या में आतंकी हमला करने वाले आतंकवादियों के मुकदमे वापस लेना था।

शनिवार को सीएम योगी कानपुर के छावनी विधानसभा क्षेत्र में कानपुर और अकबरपुर लोकसभा सीटों के लिए चुनावी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने यहां कानपुर से पार्टी प्रत्याशी रमेश अवस्थी और अकबरपुर से बीजेपी प्रत्याशी देवेन्द्र सिंह भोले के लिए जनता से वोट की अपील की। उन्होंने कहा कि कानपुर को मां गंगा के आशीर्वाद से उर्वरता और उद्यमिता का वरदान मिला है। ये क्रांति धरा होने के साथ ही देश के विकास की ऊर्जा की भूमि भी है। चौथे चरण में कानपुर की जनता को निर्णय लेना है। आज पूरे देश में एक ही स्वर गूंज रहा है शफिर एक बार मोदी सरकार और अबकी बार 400 पार। 400 पार में कानपुर और अकबरपुर की सीटें भी शामिल होंगी।

सीएम योगी ने कहा कि बीते 10 साल में मोदी जी ने बिना रुके, बिना थके और बिना डिगे देश की अहर्निश सेवा की है। हर व्यक्ति इस बात को मानता है कि मोदी जी ने देश को दुनिया में सम्मान दिलाया है, हमारी सीमाओं को सुरक्षित किया है, विकास को गति दी है, गरीब कल्याण के साथ ही नागरिकों के जीवन में परिवर्तन किया है। उन्होंने कहा कि इंडी गठबंधन नकारात्मक राजनीति के कारण अपनी विश्वसनीयता खो रहा है। इनको पाकिस्तान के हितों की चिंता होती है। इनको आतंकवाद और नक्सलवाद की समस्या के समाधान की नहीं आतंकियों पर दायर मुकदमों को वापस लेने की चिंता होती है। इनकी चिंता थी कि जैसे भी हो अयोध्या में राममंदिर का निर्माण न हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि 2014 से पहले देश में आतंकी विस्फोट में निर्दोष लोग और जवान शहीद होते थे। अब ये नहीं हो सकता, क्योंकि मोदी सरकार ने आतंकवाद की नाभी पर प्रहार किया है। ये नया भारत छेड़ता नहीं, मगर कोई छेड़ता है तो छोड़ता भी नहीं है। सीएम योगी ने कहा कि आज कानपुर में हाईवे, एक्सप्रेस वे, मेट्रो के साथ ही डिफेंस कॉरीडोर बन रहा है। नमामी गंगे के क्षेत्र में हुए कार्य का लाभ कानपुर को सर्वाधिक प्राप्त हुआ है। कानपुर के सीसामऊ और जाजमऊ में गंगा की धारा को अविरल निर्मल करने में भाजपा सरकार को सफलता मिली है।

अमित शाह के लिये वोट मांग रहे हैं मोदी, अगला नम्बर योगी आदित्यनाथ का- केजरीवाल

नई दिल्ली (आभा)। केजरीवाल ने कहा कि पीएम मोदी ने एक खतरनाक मिशन शुरू किया है और वो है वन नेशन वन लीडर। भाजपा ने अपने नेताओं का सफाया किया है। मुरली मनोहर जोशी और लालकृष्ण आडवाणी को रिटायर किया गया। इन्होंने रमन सिंह, शिवराज सिंह चौहान, वसुंधरा राजे, मनोहर लाल की राजनीति को खत्म कर दिया है। अब अगला नंबर योगी आदित्यनाथ का है।

केजरीवाल जेल से बाहर आए। जिसके बाद शनिवार को सीएम हनुमान मंदिर पहुंचे। उन्होंने अपनी पत्नी सुनीता और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के साथ कनॉट प्लेस में हनुमान मंदिर में पूजा–अर्चना की। आप कार्यालय में सीएम केजरीवाल ने मीडिया को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने जमकर भाजपा पर निशाना साधा।

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि सबको मेरा प्रणाम। 50 दिन बाद सीधा जेल से आपके पास आया हूं अच्छा लग रहा है। बजरंगबली की कृपा है। आप के शीर्ष नेताओं को जेल भेजा गया। आप कुचलने में पीएम ने कसर नहीं छोड़ी। मेरे को इन्होंने जेल भेज दिया। सबसे चोर लोगों को इन्होंने अपनी पार्टी में शामिल कर लिया।

केजरीवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री मानते हैं कि भाजपा को चुनौती आम आदमी पार्टी देगी। पीएम मोदी ने एक खतरनाक मिशन शुरू किया है और वो है वन नेशन वन लीडर। इसके तहत वो सभी देश के नेताओं को खघ्म करना चाहते हैं, सारे विपक्ष के नेताओं को जेल में डाल देंगे और सभी भाजपा के नेताओं को निपटा देंगे, उनकी राजनीति खत्म कर देंगेप् मुझसे लिखवा लो– कुछ दिनों बाद ममता बनर्जी, स्टालिन, उद्धव ठाकरे, तेजस्वी यादव समेत विपक्ष के सभी नेता जेल में होंगे यूपी के मुख्मंत्री योगी आदित्यनाथ की राजनीति खत्म करने की साजिश की जा रही है। भाजपा जीत जाएगी तो योगी आदित्यनाथ की राजनीति खत्म करेंगे।

सीएम केजरीवाल ने आगे कहा कि भ्रष्टाचार से लड़ाई लड़नी है तो केजरीवाल से सीखो। मैंने अपने नेता को भ्रष्टाचार के खिलाफ सीबीआई को सौंप दिया था। तानाशाह जनतंत्र खत्म करना चाहता है। देश को तानाशाह से बचाने का वक्त है। भाजपा ने अपने नेताओं का सफाया किया है। मुरली मनोहर जोशी और लालकृष्ण आडवाणी को रिटायर किया गया। इन्होंने रमन सिंह, शिवराज सिंह चौहान, वसुंधरा राजे, मनोहर लाल की राजनीति को खत्म कर दिया है। अब अगला नंबर योगी आदित्यनाथ का है। ये चुनाव यह जीत गए तो दो महीने में यूपी का मुख्यमंत्री बदल दिया जाएगा। जो तानाशाही है। देश के सभी नेताओं को पीएम खत्म करना चाहते हैं।

केजरीवाल ने कहा कि मैं 140 करोड़ लोगों का साथ चाहता हूं। इस देश को बचाना है। मैं लोकतंत्र को बचाना चाहता हूं। मैं मंत्री, मुख्यमंत्री बनने नहीं आया नौकरी छोड़कर यहां आया हूं। मेरा देश के लिए सबकुछ कुर्बान है। ये इंडिया गठबंधन से पूछते हैं कि प्रधानमंत्री कौन होगा? मैं भाजपा से पूछता हूं कि इनका प्रधानमंत्री कौन होगा? 2014 में मोदी ने खुद नियम बनाया था कि 75 साल की उम्र के बाद भाजपा नेता रिटायर हो जायेंगे। मोदी जी अगले साल 17 सितंबर को 75 साल के हो रहे हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि मोदी जी, क्या आप अमित शाह के लिए वोट मांग रहे हैं?

केजरीवाल ने कहा कि हमारा देश 4000 हजार साल पुराना है। जब भी देश में किसी ने तानाशाही की कोशिश की है। जनता ने उसे बाहर कर दिया। मैं उनके खिलाफ लड़ रहा हूं।

छात्र वृत्ति, फीस भरपाई के सवाल को लेकर मेधा ने चलाया मतदाता जागरूकता अभियान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । शनिवार को मेधा पार्टी के केन्द्रीय प्रवक्ता दीन दयाल तिवारी ने छात्र वृत्ति और छात्र समस्याओं के निराकरण को लेकर कचहरी परिसर में सघन मतदाता जागरूकता अभियान चलाया। सम्पर्क के दौरान उन्होने कहा कि मेधा संस्थापक पूर्व आईएएस स्वर्गीय लक्ष्मीकान्त शुक्ल ने छात्रों को छात्र वृत्ति, फीस भरपाई का अधिकार दिलाने के लिये आखिरी सांस तक संघर्ष किया और उन्हें सर्वोच्च न्यायालय से विजय श्री मिली। इसके बावजूद उत्तर प्रदेश में 20 लाख से अधिक पात्र विद्यार्थी छात्र वृत्ति, फीस भरपाई से वंचित किये जा रहे हैं। उन्होने सम्पर्क के दौरान लोगों का आवाहन किया कि जब मतदान करने के लिये जांय तो इस मुद्दे पर भी ध्यान रहे। यदि ऐसा लगता है कि कोई राजनीतिक दल इस दिशा में गंभीर नहीं है तो लोग नोटा पर बटन दबाकर अपनी नाराजगी व्यक्त कर सकते हैं।

मेधा के मतदाता जागरूकता अभियान में ई.डब्लू.एस. सामान्य वर्ग के आरक्षण में अन्य आरक्षण की भांति पात्रों को सुविधा दिया जाने। आयु सीमा में छूट देने के साथ ही एक हजार स्क्वायर फिट का मकान जिनके पास है उन्हें भी बाध्यता समाप्त कर सुविधा उपलब्ध कराने। आय प्रमाण–पत्र की वैधता तीन वर्ष के लिये लागू किये जाने, सभी गरीब निर्धन परिवार के वंचित छात्र–छात्राओं को फीस भरपाई, वजीफे का अधिकार देने, आय सीमा समान किए जाने, अनुसूचित जाति एवं जन जाति के छात्र–छात्राओं का प्रवेश शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थानों में निशुल्क किए जाने आदि मांग शामिल है। मतदाता जागरूता अभियान में मुख्य रूप से उमेश पाण्डेय 'मुन्ना', रूद्र आदर्श पाण्डेय, राहुल तिवारी आदि शामिल रहे।

बैठक में मतदान प्रतिशत बढाने पर जोर

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भारत विकास परिषद वशिष्ठ शाखा द्वारा मतदाता जागरुकता हेतु कंपनी बाग स्थित प्रेस क्लब में बैठक का आयोजन किया गया कार्यक्रम में समाज के प्रबुद्ध जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में हर्रैया में नव गठित मनवर शाखा के सदस्य भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता और स्वामी विवेकानन्द जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ प्रारम्भ किया गया। आये हुए अतिथियों के समक्ष भारत विकास परिषद संस्था का उद्देश्य और कार्य योजना को सेवानिवृत्त कर्नल के0 सी0 मिश्र द्वारा प्रस्तुत किया गया। विश्व हिन्दू परिषद प्रांतीय पदाधिकारी श्रीमान नागेंद्र सिंह ने देश मे चल रहें लोकतंत्र के महोत्सव मैं सबकी सहभागिता पर विशेष जोर दिया ।

मुख्य वक्ता के रूप में क्षेत्रीय संगठन मंत्री विक्रांत खंडेलवाल द्वारा मत की शक्ति और उसके प्रयोग का निवेदन किया गया, उन्होंने बताया मत ऐसा हो कि मत के बाद पछताना न पड़े हमारी राष्ट्र को लेकर क्या अपेक्षा है और इसे कौन सी विचारधारा पूरी कर सकता है सच्ची और अच्छी समीक्षा करते हुए मताधिकार का प्रयोग करना है।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए भारत विकास परिषद् के गोरक्ष प्रान्त के कैलाश नाथ दूबे ने बताया कि समाज मे भारत विकास परिषद की बड़ी प्रतिष्ठा है, जो सेवा कार्य करने के लिय समाज की लोक शक्ति को साथ लेकर सतत प्रयत्नशील रहता है। समग्र देश में चल रहे मतदान के महा पर्व मे राष्ट्र के हित मे लोकतांत्रिक अधिकार का प्रयोग अवश्य करें।

संचालन अनुराग शुक्ल ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से अखिलेश दूबे, डॉ0 डी0 के0 गुप्ता,प्रेम शकंर ओझा, प्रमोद तिवारी, पंकज त्रिपाठी , मनवर शाखा के संरक्षक अवधेश त्रिपाठी, मनवर शाखा के अध्यक्ष सुभाष त्रिपाठी,धीरज सरीन, राम चन्द्र शुक्ल, अभिनव पाण्डेय, अंजना श्रीवास्तव,सी0 ए0 अभिषेक मणि त्रिपाठी, अशोक त्रिपाठी,गरुण ध्वज पाण्डेय, दिलीप गुप्ता, सौरभ तुलस्यान, अंकुर यादव, राहुल त्रिपाठी, सुनील सिंह, रत्नेश मिश्र, प्रदीप शुक्ला, आलोक पांडेय, आदि उपस्थित रहे

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 12 मई 2024 रविवार

सम्पादकीय

केजरीवाल के तीखे तेवर

जेल से बाहर आने के बाद केजरीवाल के तेवर मोदी सरकार के खिलाफ और तीखे हो गए हैं। वह बीजेपी पर एक के बाद एक अटैक कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि केजरीवाल को कभी किसी पद का लालच नहीं है। उन्होंने कहा, 'मैं सीएम, पीएम बनने नहीं आया हूं। इनकम टैक्स में कमिश्नर की नौकरी छोड़कर दिल्ली की झुग्गियों के अंदर 10 साल काम किया। दिल्ली की जनता ने पहली बार सीएम बनाया, उसूलों के ऊपर 49 दिन के भीतर इस्तीफा दे दिया था। एक चपरासी की नौकरी कोई नहीं छोड़ता। मेरे लिए सीएम पद अहम नहीं है। मैं भाजपा से पूछता हूं कि उनका प्रधानमंत्री कौन होगा? प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी अगले साल 17 सितंबर को 75 साल के हो रहे हैं। उन्होंने नियम बनाया था कि 75 साल की उम्र वालों को 'रिटायर' कर दिया जाएगा। उन्होंने लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, सुमित्रा महाजन को रिटायर (सेवानिवृत्त) कर दिया।' उन्होंने कहा, 'वह (मोदी) अगले साल रिटायर हो जाएंगे। वह अमित शाह (केंद्रीय गृह मंत्री) को प्रधानमंत्री बनाने के लिए वोट मांग रहे हैं। क्या शाह मोदी जी की गारंटी पूरी करेंगे?' केजरीवाल ने यह भी दावा किया कि यदि भाजपा सत्ता में आई तो पार्टी दो महीने के भीतर उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बदल देगी।

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को सर्वोच्च न्यायालय ने चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत देकर प्रथम दृष्टया चुनाव और लोकतंत्र का महत्व बढ़ाया है। शीर्ष अदालत ने पूरी सुनवाई के बाद उन्हें 1 जून तक रिहाई दी है। देश में मतदान का आखिरी चरण 1 जून को संपन्न होगा और 2 जून को उन्हें समर्पण करना होगा, वह फिर जेल जाएंगे। इसका सीधा अर्थ है कि चुनाव के बचे हुए कम से कम तीन चरणों में केजरीवाल ठीक से चुनाव प्रचार कर पाएंगे। बेशक, आम आदमी पार्टी में एक नए जोश का संचार होगा और विपक्षी गठबंधन को भी मजबूती मिलेगी। हालांकि, यह अंतरिम जमानत सशर्त है। रिहाई के इन 21 दिनों में वह मुख्यमंत्री का कोई कर्तव्य नहीं निभाएंगे। वह मुख्यमंत्री कार्यालय और सचिवालय नहीं जाएंगे। अपने इस मुकदमे के बारे में चर्चा नहीं कर पाएंगे। सबसे बड़ी बात, वह दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति से जुडे मनी लॉन्ड्रिरंग मामले में अपनी भूमिका के बारे में भी कोई टिप्पणी नहीं कर पाएंगे, जिसमें उन्हें गिरफ्तार किया गया है। इसके बावजूद अनेक विशेषज्ञ यह मानते हैं कि चुनाव प्रचार के लिए आम आदमी पार्टी के पास मुद्दों का अभाव नहीं है।

अरविंद केजरीवाल को मिली अंतरिम जमानत के दो मुख्य आधार हैं। पहला आधार तो यही है कि मुकदमा नया नहीं है, पर गिरफ्तारी के समय को लेकर सवाल लाजिमी है। किसी भी पार्टी के प्रमुख या मुख्यमंत्री के लिए चुनाव प्रचार का विशेष महत्व होता है। किसी पुराने मामले में अगर ठीक चुनाव से पहले कार्रवाई शुरू होती है, तो संदेह की गुंजाइश बन जाती है। सर्वोच्च न्यायालय ने भी इस तथ्य को माना है और ईडी के पास इसका कोई ठोस जवाब नहीं है। अगर ईडी गिरफ्तारी के समय और जरूरत को न्यायोचित ठहरा पाती, तो दिल्ली के मुख्यमंत्री को 21 दिन की रिहाई नसीब नहीं होती। दूसरी बात, मुकदमा होने के बाद भी केजरीवाल मुख्यमंत्री थे और उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया था, वह मुकदमे से जुड़े तथ्यों के साथ तब भी खिलवाड़ कर सकते थे, पर अदालत की नजरों में उन्होंने ऐसा नहीं किया, जिसका लाभ उन्हें रिहाई के रूप में मिला है। सर्वोच्च न्यायालय ने साफ इशारा किया है कि अभी अपराध सिद्ध नहीं हुआ है और केजरीवाल समाज के लिए खतरा नहीं हैं। इन तथ्यों की रोशनी में ईडी केजरीवाल की रिहाई का ठीक से विरोध नहीं कर सकी है। खैर, ईडी के पास अभी भी मौका है, उसे आगामी दिनों में पूरी तैयारी और अकाट्य साक्ष्यों के साथ अदालत में आना होगा, वरना एक मुख्यमंत्री को ज्यादा समय तक जेल में रखना गरिमामय नहीं है।

खैर, अदालत में 2 जून को चाहे जो हो, आगामी 21 दिन केजरीवाल के लिए उतने ही अहम होंगे, जितने उनके विरोधियों के लिए। विशेष रूप से दिल्ली और पंजाब में अरविंद केजरीवाल की लोकप्रियता या प्रासंगिकता से भला कौन इनकार कर सकता है? अगर इन दोनों राज्यों में आम आदमी का प्रदर्शन अच्छा रहता है, तो इससे दिल्ली के मुख्यमंत्री को भी अपनी बात मजबूती से रखने का आधार मिलेगा। लोकतंत्र में बहुत हद तक जनता ही फैसला करती है, किसी दागी को किनारे लगाने की बात हो या सत्ता सौंपने की बात, जनादेश के बाद ही व्यवस्था को आगे बढ़ने या ठिठक जाने का इशारा मिलता है। बेशक, यह एक विरल मामला है, जब जेल में बंद एक मुख्यमंत्री या नेता को चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत का लाभ दिया गया है, पर यह समग्र भारतीय राज्य की उदारता का नवीनतम प्रमाण है।

जिंदगी की शाम हो जाए .....!

—मनोज सिंह—

जिंदगी तो बेवफा है एक दिन ठुकराएगी मौत महबूबा है अपनी साथ ये ले जाएगी ।

आदमी आदमी को सुहाता नहीं कर्म ऐसे अरे कर रहा आदमी, हाल इतना बुरा है कि विश्वास भी आदमी पर नहीं कर रहा आदमी ।

समाज के हर व्यक्ति के मन में एक विश्वास होता है कि वह 80, 90 और 100 साल तक इस दुनिया में जरूर रहेगा लेकिन मानव जीवन के उम्र रूपी खाते में जीवन रूपी कितना बैलेंस है इसका पता किसी को नहीं रहता लेकिन अपने स्वास्थ्य के अनुरूप एक विश्वास होता है कि हम इस दुनिया में इतने दिनों तक जरूर रहेंगे लेकिन कितने दिनों तक रहेंगे इसका अनुमान बड़े–बड़े मठाधीशों को भी नहीं है जो दूसरों का भाग्य विधाता बनते हैं दिन रात टी वी चैनलों पर या अपने को समाज का भाग्य विधाता समझने या बनने वाले .....।

दुख इस बात का है कि हर व्यक्ति को पता है कि एक निश्चित अवधि तक इस दुनिया में उसे रहना है कब कहां कौन सी घटना घट जाये और जीवन लीला एक ठोकर में समाप्त हो जाए इसके बावजूद भी बहुत से लोग दूसरों का शोषण अपने थोड़े से लाभ के लिए करने से बाज नहीं आते जबकि ऐसे लोग इस दुनिया से जाते समय कुछ लेकर भी नहीं जा पाते बल्कि अपने द्वारा शोषित लोगों की बद्दुआ जरूर लेकर जाते हैं वहीं साधारण जीवन जीने वाले नेक दिल लोग समाज के लोगों का अपनापन और प्यार लेकर जाते हैं ।

लग्जरी जीवन की चाहत में समाज इतना दूषित हो गया है कि समाज के अच्छे लोग भी उसी दूषित जीवन शैली में ना चाहते हुए भी रंग गए हैं बहुत से लोग उच्च शिक्षा प्राप्त करके बड़े पदों पर पहुंचने के पश्चात कुछ समय तक तो ईमानदारी से अपना कार्य करते हैं लेकिन जब सिस्टम से सामना होता है और परिवार लग्जरी जीवन की चाहत करता है तो ना चाहते हुए भी लोग अपनी ईमानदारी को ताँख पर रख देते हैं वहीं आज भी समाज में ऐसे लोग रहते हैं जो सत्ता और सिस्टम से समझौता नहीं करते लेकिन ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है और दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है क्योंकि काजल की कोठरी में कितनो ही सयानो जाये ,विन कालिख लगे बच नहीं पाए ।

एक तरफ समाज में सामाजिक प्रदूषण बढ़ गया है दूसरे तरफ समाज के अच्छे लोग मौन हो गए हैं और मौन हो भी क्यों ना यदि सच बोल दे तो समाज के पागलों में उनकी गिनती समाज के वह व्यभिचारी लोग कर देते हैं जिनका खुद का कोई चरित्र नहीं है । सच जब तक अपनी बात रखता है झूठ तब तक पूरे गांव की परिक्रमा करके आ जाता है

समाज में दिखावा इस कदर बढ़ गया है कि अपने को समाज में धनाढ्य दिखाने के लिए अपनी औकात से बढ़कर लग्जरी वाहन और तरह–तरह के रूप धारण करके समाज में झूठी संपन्नता का दिखावा करते हैं इस दिखावे से घृणा तो तब हो गई जब कुछ लोगों के बारे में पता चला कि वह दूसरों का लाखों से अधिक धन और जमीन का शोषण करके दसियो लाख से अधिक या मिनी करोड़पती बनने का दिखावा करने का प्रयास करते हैं लेकिन ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि वह जिन लोगों का शोषण कर रहे हैं ऐसे लोग किसी न किसी से अपनेपन में अपना दर्द जरूर बयान करते हैं फिर धीरे–धीरे समाज के अधिकांश लोगों को धूर्त लोगों के बारे में जानकारी हो जाता है ।

दिखावा करने की प्रवृत्ति ने हमारे सामाजिक अनुष्ठानों और कार्यक्रमों का सत्यानाश करके रख दिया है आज से मात्र 30 ,40 साल पहले मृत्यु भोज में पाटीदार और अधिकतम गांव के कुछ लोग शामिल होते थे लेकिन ऐसे संवेदनशील क्रिया कर्म को सामाजिक दिखावा ने इस कदर अपनी चपेट में ले लिया है इसमें कहीं ना कहीं वर्तमान राजनीतिक दोषपूर्ण प्रणाली के का भी हाथ है ।

जिसके चलते तेरेही जैसे संस्कार में 20, 50 तथा सौकडो गांव के लोगों को आमंत्रित करके इस कदर लजीज व्यंजनों का इंतजाम किया जाता है जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है की यह मृत्यु भोजन होकर कोई महोत्सव का कार्यक्रम है । तेरेही जैसे संस्कार के चलते एक वह वर्ग जो एन केन प्रकरण (होशियारी और चालाकी) के चलते अच्छा पैसा कमा लेता है और बड़ी व्यवस्था करता है वही मध्यम वर्गीय परिवार जिनकी संख्या 70: से अधिक है ऐसे लोग उनकी देखा देखी मजबूरी में उससे मिलता जुलता कार्यक्रम करने के चलते दूसरों के कर्जदार होते हैं इस कुव्यवस्था के चलते समाज के बहुत से लोगों ने तीन दिन का संस्कार करना और करवाना शुरू कर दिए हैं जिसके चलते आज शहरों में अधिक और गांव में बहुत से परिवारों को राहत मिल रही है ऐसे साधारण लोग समाज के जागरुक लोगों के चलते कर्जदार होने से बच जा रहे हैं ।

मैं भी इस प्रथा के विरोध में 2006 से निरंतर कभी लेख के माध्यम से कभी विचारों के माध्यम से लोगों में जागरूकता लाने का प्रयास कर रहा हूं और उसका सकारात्मक परिणाम भी हमको मिला हैं मेरा गांव सैकड़ो क्षत्रियों का गांव है ऐसे गांव में हमने दो परिवारों में तीन दिन का संस्कार करने में सफलता पाया किंतु अपने ही घर में असहाय हो गया आज उसी से व्यथित होकर अपने जीवन के बाद के विषय में लिखना चाहता हूं ताकि समाज के धूर्त लोग मेरे ना रहने पर मनमानी न कर सके ।

मैं स्वयं अपने ना रहने पर 3 दिन के संस्कार की अपेक्षा और इच्छा रखता हूं अंतिम यात्रा पर ले जाते समय लोग नंगा करके स्नान करते हैं गांव के लुखा, स्तर विहीन लोग ऐसे देखते हैं जैसे उन्होंने कभी उनको देखा ना हो मैं इस परंपरा का भी विरोधी हूं क्योंकि समाज में बहुत से लोग तार तार हो जाते हैं तमाम तकलीफें उठाते हैं लेकिन अपने गांव अपने रिश्ते अपने नातो में कभी नंगा नहीं होते नंगा होने का तात्पर अपने अन्दर की तकलीफ नहीं दिखाते लेकिन उनके ना रहने पर लोग उनको नंगा करके स्नान कराते हैं कुछ गांव के लोग कुछ इस टाइप के रिश्तेदार भी इस तरह तकते हैं जैसे उन्होंने कभी देखा ना हो तो ऐसी परंपराएं बंद होनी चाहिए जिस कपड़े में व्यक्ति हो उसी में सफेद कफन में लपेटकर अंतिम संस्कार के लिए ले जाना चाहिए यह मेरे निजी विचार हैं क्योंकि मैं जब समाज के रीति रिवाज का अध्ययन करता हूं तो लोग कहते हैं की बिना कपड़े के स्नान नहीं करना चाहिए जीवित रहते, और ना रहने पर ऐसी कौन सी आवश्यकता पड़ जाती है की कपड़े उतार कर स्नान करना पड़ता है तभी व्यक्ति स्वर्ग में जाएगा स्वर्ग और नरक किसी ग्रह पर मौजूद नहीं है आप अच्छा कार्य करके जाते हैं तो लोग अपने पन में स्वम कहते हैं कि उनको स्वर्ग जरुर मिलेगा और जब आप किसी का शोषण करके जाते हैं तो लोग कहते हैं ऐसे घटिया इंसान को नर्क जरुर मिलेगा ।

ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर आमतौर पर कोई खुलकर लिखना नहीं चाहता लेकिन यदि हम लिखेंगे नहीं तो जिंदगी के उम्र की कब शाम हो जाए तब ऊपर वाला लिखने की मौका नहीं देगा और समाज अपनी मनमानी से बाज नहीं आएगा

अनुवाद दर्द की भाषा का
लेखनी से अपनी कर डाला
बहुतों का दर्द समझ इसे
पढ़ जाओ तो कोई बात बने।

निर्यात में विविधता की चुनौतियां

—जयंतीलाल भंडारी—

हाल ही में 4 मई से सरकार ने प्याज के निर्यात पर लगे प्रतिबंध को हटा दिया है। यह फैसला देश में प्याज के मौजूदा रबी पैदावार के अच्छे होने और बेहतर मानसून की वजह से इस वर्ष खरीफ के दौरान भी बढ़िया पैदावार की संभावना को देखते हुए किया गया है। सरकार ने प्याज निर्यात की न्यूनतम कीमत 550 डॉलर प्रति टन तय की है और इस पर 40 फीसदी का निर्यात शुल्क भी लगेगा। इस फैसले की वजह से देश में प्याज की पैदावार करने वाले किसानों की आय में बढ़ोतरी होगी। ज्ञातव्य है कि पिछले वर्ष दिसंबर, 2023 में केंद्र सरकार ने वर्ष 2022 के खरीफ पैदावार की स्थिति को देखते हुए प्याज निर्यात को प्रतिबंधित कर दिया था। इसका असर घरेलू बाजार में खास तौर पर दिखा है। इस दौरान देश में प्याज की कीमतें अमूमन स्थिर रही हैं। चूंकि वर्ष 2023–24 में 2.55 करोड़ टन प्याज उत्पादन की संभावना है। जो देश की मांग और निर्यात मांग को देखते हुए पर्याप्त है। अभी निर्यात प्रतिबंधित होने के बावजूद बांग्लादेश, भूटान, यूएई, श्रीलंका आदि को कुछ मात्रा में प्याज की आपूर्ति की गई है। निश्चित रूप से प्याज निर्यात से प्याज उत्पादक किसानों को लाभ होगा।

दरअसल, घटते हुए वैश्विक व्यापार और घटते हुए वैश्विक निर्यात के बीच भारत से निर्यात के सूझबूझपूर्ण निर्णय लिए जाने होंगे। यद्यपि भारत से पिछले कुछ वर्षों में लगातार रिकॉर्ड निर्यात हुए हैं, लेकिन अब भीषण होते हुए इस्राइल–ईरान टकराव से गहराती हुई नई वैश्विक व्यापार चुनौतियों के बीच भारत को निर्यात बढ़ाने व आयात घटाने की विशेष रणनीति के साथ आगे आना होगा। खासतौर से हाल ही में 28 अप्रैल को प्रकाशित आर्थिक टैंक ग्लोबल ट्रेड एंड रिसर्च इनिशिएटिव की रिपोर्ट के मुताबिक भारत के वस्तु आयात में चीन की जो हिस्सेदारी बढ़कर 30 फीसदी के चिंताजनक स्तर पर पहुंचते हुए 101 अरब डॉलर की ऊंचाई पर पहुंच गई है, उसे आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया अभियानों से नियंत्रित करना होगा।

गौरतलब है कि हाल ही में वाणिज्य मंत्रालय की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले वित्त वर्ष 2023–24 में भारत से माल एवं सेवाओं का कुल निर्यात 776.68 अरब डॉलर रहा, जो वित्त वर्ष 2022–23 में 776.40 अरब डॉलर रहा था। ऐसे में गत वित्त वर्ष में सेवा निर्यात 3.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 339. 62 अरब डॉलर का रहा, जबकि वस्तु निर्यात 3.11 प्रतिशत की गिरावट के साथ 437.06 अरब डॉलर रहा। जहां पिछले वर्ष में कुल आयात 854.80 अरब डॉलर का रहा, वहीं वर्ष 22–23 में कुल आयात 898 अरब डॉलर मूल्य का रहा था। ऐसे में पिछले वर्ष आयात में कमी से कुल व्यापार घाटे में 36 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। पिछले वर्ष में आयात में गिरावट की बड़ी वजह तेल का कम आयात था। कच्चे तेल की कीमतें कम रहने से बीते वर्ष में तेल के आयात पर करीब 16 फीसदी कम खर्च हुआ।

निश्चित रूप से बीते कुछ वर्षों में भारत के निर्यात का एक चमकदार पहलू सेवा निर्यात है। भारत डिजिटल माध्यम से मुहैया करायी गयी सेवाओं के निर्यात में वैश्विक बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा रहा है। डिजिटल माध्यम से सेवा निर्यात के तहत कंप्यूटर नेटवर्क का इस्तेमाल कर शिक्षा, मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन, गेमिंग, मनोरंजन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आदि के लिए दक्ष ऑपरेटर, कुशल प्रोग्रामर और कोडिंग विशेषज्ञ द्वारा दी जाने वाली सेवाएं शामिल हैं। भारत में बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (जीसीसी) की तेजी से नई स्थापनाओं के कारण भी सेवा निर्यात बढ़ रहा है। यह कोई छोटी बात नहीं है कि वर्ष 2015–16 से लगाकर वर्ष 2022–23 के बीच भारत में जीसीसी की संख्या 60 फीसदी बढ़कर 1,600 से अधिक हो गई है। विश्व व्यापार संगठन की रिपोर्ट के अनुसार डिजिटल माध्यम से जुड़ी हुई सेवाओं के तेजी से बढ़ते निर्यात के कारण इस क्षेत्र में भारत जर्मनी और चीन को पीछे छोड़ते हुए दुनिया में अमेरिका, ब्रिटेन और आयरलैंड के बाद चौथे क्रम पर आ गया है।

इस समय भारत के प्रमुख निर्यात बाजारों में अमेरिका, यूएई, यूरोपीयन यूनियन, ब्रिटेन, सिंगापुर, मलेशिया, बांग्लादेश, नीदरलैंड, चीन व जर्मनी शामिल हैं। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि भारत से दवाओं का निर्यात 2023–24 में 27.9 अरब डॉलर पहुंच गया है। 2022–23 के दौरान यह आंकड़ा 25.4 अरब डॉलर रहा था। सरकार द्वारा प्रमुख दवा सामग्री और जेनेरिक दवाओं के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए जो दो उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाएं शुरू की गई हैं, उनका लाभ दवा निर्यात में मिलने लगा है। आईफोन के निर्यात में भी भारत उभरकर दिखाई दे रहा है। आईफोन निर्माता कंपनी एपल ने पिछले वर्ष में भारत से 10 अरब डॉलर के आईफोन का निर्यात किया, जो अभी तक का रिकॉर्ड है। कंपनी ने पीएलआई योजना के तहत पिछले वित्त वर्ष 2023–24 में जो फोन बेचे, उनकी कीमत 2022–23 में बिके आईफोन की कीमत से दोगुनी करीब एक लाख करोड़ रुपये रही है। भारत में यह पहला मौका है, जब किसी कंपनी ने इतनी अधिक कीमत का अपना कोई उपभोक्ता उत्पाद निर्यात किया है। एपल दुनियाभर में वैल्यू चेन रखने वाली पहली ऐसी कंपनी है, जिसने भारत को घरेलू बाजार के बजाय निर्यात के लिए अपना केंद्र बना लिया है।

इसमें कोई दो मत नहीं है कि युद्धजनित आर्थिक चुनौतियों के बीच भारत के लिए वैश्विक व्यापार और निर्यात बढ़ाने हेतु मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) की अहमियत और बढ़ गई है। भारत ने अब तक तीन एफटीए किए हैं। भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के बीच मई 2022 में लागू द्विपक्षीय कारोबार में पिछले दो वर्षों में 15 फीसदी की बढ़ोतरी देखने को मिली है। यूएई, भारत का दूसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य, तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार और चौथा सबसे बड़ा निवेशक देश है। इसी तरह ऑस्ट्रेलिया के साथ भी हुए एफटीए से भारत का ऑस्ट्रेलिया के साथ भी द्विपक्षीय व्यापार बढ़ा है। विगत 10 मार्च को भारत और चार यूरोपीय देशों के समूह यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन (ईएफटीए) के बीच निवेश और वस्तुओं एवं सेवाओं के दोतरफा व्यापार को बढ़ावा देने के लिए किया गया एफटीए भी अत्यधिक उपयोगी है।

दुनिया में भू राजनीतिक मुश्किलें लगातार बढ़ रही हैं, उससे कच्चे तेल के दाम के साथद्रसाथ आपूर्ति संकट बढ़ने की चिंताएं मुंहबाएं खड़ी हैं। इससे भारत के वैश्विक व्यापार व निर्यात पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। ऐसे में भारत को निर्यात बढ़ाने व चीन से आयात घटाने की नई रणनीति के साथ आगे बढ़ना होगा। देश में उच्च व्यापार दरों और मांग में कमी के कारण निर्यातक के मोर्चे पर जूझ रहे छोटे निर्यातकों को कम ब्याज दरों पर ऋण मुहैया कराने व बैंक को इसके बदले सरकार से मुआवजा दिए जाने के लिए लागू की गई इंटरेस्ट इक्वलाइजेशन स्कीम (आईईएस) की जो अवधि 30 जून, 2024 को समाप्त हो रही है, उसे एक वर्ष के लिए और आगे बढ़ाया जाना लाभप्रद होगा। जिस तरह विकसित अर्थव्यवस्था वाले कई देश लम्बे समुद्री आवागमन से पहुंचने वाले दूरदराज के देशों की बजाय अपने तट के आसपास के देशों में कारोबार पर जोर दे रहे हैं, वैसी रणनीति पर भारत को भी ध्यान देना होगा। यद्यपि भारत को दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी सेवा निर्यात में तुलनात्मक रूप से बढ़त हासिल है लेकिन यह बात ध्यान में रखी जानी होगी कि अब सेवा निर्यात के क्षेत्र में भी लगातार प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में भारत से डिजिटल सेवा निर्यात में तेजी से वृद्धि के लिए सेवाओं की गुणवत्ता, दक्षता, उत्कृष्टता तथा सुरक्षा को लेकर और अधिक प्रयास करना होंगे।

पानी का गहराता संकट

—भारत डोगरा —

गर्मी का यह मौसम हर साल हमें निष्ठापूर्वक पानी की याद दिलाता है, लेकिन हम मानसून आते–आते ठीक उसी निष्ठा से उसे भूल जाते हैं। हर साल देश के सुदूर इलाकों से पानी के संरक्षण, संवर्धन और किफायती इस्तेमाल को लेकर तरह–तरह की खबरें आती हैं, उन्हें देख–सुनकर हम थोड़ी देर के लिए गद्गद भी हो लेते हैं, लेकिन उनसे सीखकर कभी पानी का मान नहीं रख पाते।

देश के अनेक क्षेत्रों में जल–संरक्षण के अनेक उपाय स्थानीय के अनुकूल वहां के समुदायों ने विकसित किए हैं। राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों में वर्षा के पानी को संग्रहण करने के अनेक तौर–तरीके अपनाए जा रहे हैं। वहां से थोड़ा आगे जाएं, तो गुजरात के कच्छ क्षेत्र में भी ऐसे परंपरागत सूझबूझ के अनेक तरीकों को देखा जा सकता है। व्यक्तिगत या गांव–समुदाय की भूमि में विशेष रूप से जलग्रहण क्षेत्र तैयार कर उसके पानी को एक 'कुण्डी' नामक कुएं में एकत्र करने के कार्य को राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में देखा जा सकता है। ध्यान इस बात पर दिया जाता है कि अधिकतम पानी कुएं में पहुंच सके। जलग्रहण क्षेत्र की गई इंटरेस्ट इक्वलाइजेशन स्कीम (आईईएस) की जो अवधि 30 जून, 2024 को समाप्त हो रही है, उसे एक वर्ष के लिए और आगे बढ़ाया जाना लाभप्रद होगा। जिस तरह विकसित अर्थव्यवस्था वाले कई देश लम्बे समुद्री आवागमन से पहुंचने वाले दूरदराज के देशों की बजाय अपने तट के आसपास के देशों में कारोबार पर जोर दे रहे हैं, वैसी रणनीति पर भारत को भी ध्यान देना होगा। यद्यपि भारत को दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी सेवा निर्यात में तुलनात्मक रूप से बढ़त हासिल है लेकिन यह बात ध्यान में रखी जानी होगी कि अब सेवा निर्यात के क्षेत्र में भी लगातार प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में भारत से डिजिटल सेवा निर्यात में तेजी से वृद्धि के लिए सेवाओं की गुणवत्ता, दक्षता, उत्कृष्टता तथा सुरक्षा को लेकर और अधिक प्रयास करना होंगे।

भी परंपरागत उपायों से पर्याप्त पेयजल की व्यवस्था कर लेाग काफी हद तक आत्मनिर्भर बने हुए थे।

उत्तर–पूर्व के राज्यों में परंपरागत सिंचाई के अनेक श्रेष्ठ उदाहरण मिल सकते हैं। बांसों की पाईपलाईन के माध्यम से काफी दूर के पौधों तक ठीक उतना पानी पहुंचाना, जितना पौधों के लिए जरूरी है, मेघालय की विशेष उपलब्धि है। वर्ष 1956 में आंध्र प्रदेश में सिंचाई के लिए उपयोगी 58,518 तालाब थे, जिनसे लगभग 10 लाख हैक्टेयर की सिंचाई हो रही थी, यानी कुल सिंचित क्षेत्र के 40 प्रतिशत की। इसमें कुछ कमी अवश्य आई है, पर इसका महत्व बना हुआ है। इनमें से अनेक तालाब एक–दूसरे से जुड़े हैं व उनमें पानी का पूरा–पूरा उपयोग होता है, वह व्यर्थ नहीं बहता। तमिलनाडु के कुल सिंचित क्षेत्र में से लगभग एक–तिहाई की सिंचाई आज भी 'एरी' नामक प्राचीन तालाबों से हो रही है। बाढ़ व सूखे का दोहरा संकट देश की बहुत बड़ी समस्या है। परंपरागत जल–संग्रहण से सूखे के संकट से तो राहत मिलेगी ही, साथ ही बाढ़ की समस्या को भी कम करने में सहायता मिलेगी। जब बहुत से जल को नदी की ओर वेगपूर्वक बढने देने के स्थान पर खेती व अन्य उपयोगों के लिए तरह–तरह से मोड़ा व संजोया जाता है, तो इससे बाढ़ की आशंका कम होती है।

बिहार के गया जिले में जब तक 'आहार' व 'पाईन' व्यवस्था सशक्त रहीं, इन्होंने बाढ़ व सूखे दोनों को रोकने में सहायता दी। राजस्थान में भयानक सूखे के दिनों में देखा गया कि जहां आधुनिक पेयजल स्रोतों के आने के बाद भी परंपरागत संग्रहण की उपेक्षा नहीं की गई, वहां लोगों की पेयजल के मामले में आत्मनिर्भरता बनी हुई थी। परंपरागत जल–संग्रहण की प्रणालियां एक सामूहिक प्रयास हैं। बुंदेलखंड व नर्मदा क्षेत्र की 'हवेली पद्धति' को लें या बिहार की 'आहार', 'पाईन' पद्धति को, ये किसानों के सामूहिक प्रयास या तालमेल के बिना संभव नहीं हैं। तालाब बनाने में, उसके रख–रखाव में, उसकी सफाई में पूरे गांव का योगदान होता है।

अगर ईवीएम में गड़बड़ी न हुई तो नहीं आएगी मोदी सरकार –मायावती

संवाददाता–श्रावस्ती। श्रावस्ती जिले के कटरा के पर्यटन मैदान में शनिवार को बसपा की ओर से जनसभा का आयोजन हुआ। जिसमें बसपा सुप्रीमो पूर्व मुख्यमंत्री ने मंडल स्तरीय प्रत्याशियों के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए उन्हें जिताने की अपील की। इस दौरान उन्होंने सपा, भाजपा व कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। जनसभा में बसपा सुप्रीमो व पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने कहा कि केंद्र सरकार जो निरुशुल्क खाद्यान्न दे रही है। वह अपने पैसे से नहीं बल्कि आपके कोई आरोप नहीं है। दूसरी पार्टियों ने धन्ना सेठों व पूंजीपतियों से पैसा लिया है। कांग्रेस बीजेपी व अन्य दल आपको गुमराह कर सत्ता में आना चाहते हैं। पूंजीपतियों की पोषक इन पार्टियों के वायदों में न फंस इन्हें सत्ता से बाहर कर दें। आजादी के बाद सबसे ज्यादा देश पर कांग्रेस का राज रहा। जिसे अपनी गलत नीतियों के कारण सत्ता से बाहर होना पड़ा। कांग्रेस की तरह पूंजीवादी सोच के चलते भाजपा राज में भी दलित, गरीब, मुस्लिम व आदिवासियों का उत्थान नहीं हो पाया। ऊंची जाति के गरीबों का भी कोई भला नहीं हुआ। सपा पर निशाना साधते हुए कहा कि ब्राह्मणों की हालत सपा ने खराब कर दी थी। अब बीजेपी कर रही है। उन्होंने सर्व समाज का आह्वान किया कि एकजुट होकर बसपा प्रत्याशियों को वोट देकर पूंजीवादी पार्टियों को सत्ता से बाहर कर दें। इस दौरान श्रावस्ती, कैसरगंज, गोंडा व बहराइच के पार्टी प्रत्याशी सहित भारी संख्या में पार्टी पदाधिकारी, कार्यकर्ता व आमजन मौजूद रहे। ही टैक्स के पैसे से दे रही है। बीजेपी व उनके सहयोगी दलों के जातिवादी, पूंजीवादी, सांप्रदायिक व द्वेषपूर्ण नीतियों के कारण उनकी कथनी व करनी में अंतर है। इससे लगता है कि बीजेपी सत्ता में वापस आने वाली नहीं है। आम लोगों में चर्चा है कि यदि ईवीएम में गड़बड़ी नहीं हुई तो इस बार सरकार जरूर बदलेगी। इस बार उनकी कोई जुमलेबाजी और गारंटी नहीं चलेगी। मायावती ने इलेक्टोरल बॉन्ड को लेकर कहा कि देश में बीएसपी ही ऐसी पार्टी है जिस पर इसको लेकर

राप्ती में दोस्तों संग स्नान करते समय युवक डूबा

संवाददाता–देवरिया। क्षेत्र के कपरवार स्थित उग्रसेन सेतु के निकट राप्ती नदी में शनिवार करीब दस बजे स्नान करते समय एक युवक डूब गया। पुलिस व गोताखोर नदी में डूबे युवक की तलाश कर रहे है। राप्ती के संगम तट पर भैंस चराने वाले कपरवार और बड़हलगंज कोतवाली थाना क्षेत्र के ग्राम पटना के दर्जन भर युवक नदी में स्नान कर रहे थे। युवकों में तैर कर नदी पार करने की होड़ लगी। इसी बीच पटना निवासी अमन यादव (20) पुत्र सोमनाथ यादव नदी के मध्य धारा में तेज प्रवाह में फंस कर डूबने लगा। उसके चिल्लाने की आवाज सुनकर साथी युवक बचाने के लिए कूटे, लेकिन तब तक अमन नदी की गोद मे समा गया। युवक के डूबने की जानकारी मिलते ही पटना चौकी की पुलिस और ग्रामीण मौके पर पहुंचे। पुलिस नाविक और स्थानीय गोताखोर की मदद से डूबे युवक की तलाश में जुटी है। पानी के प्रवाह के खिलाफ तैरने का युवाओं का अति उत्साह भारी पड़ा। नदी पार करने की शर्त लगाकर 12 युवक नदी में कूद गए। नदी के मध्य जाते चार युवकों का उत्साह थमने लगा। तीन ने तो जैसे तैसे नदी की तेज धारा को पार कर लिया, लेकिन अमन लहरों से संघर्ष में हार गया। जब तक उसके साथी बचाते वह नदी की लहरों में गुम हो गया।

ईंट–भट्ठे की दीवार भरभरा कर ढही एक मजदूर की मौत, तीन घायल

संवाददाता–महराजगंज। भिटौली थानाक्षेत्र के कम्हरिया खुर्द गांव के एक ईंट–भट्ठे की दीवार शनिवार को भरभरा कर गिर गई। इस हादसे में एक मजदूर दीवार के मलवे के नीचे दब गया। जिससे उसकी मौत हो गई। तीन मजदूर और भी घायल हुए। घटना की जानकारी मिलते ही डीएम अनुनय झा, एसपी सोमेन्द्र मीना, एसडीएम रमेश कुमार, सीओ आभा सिंह मौके पर पहुंचे। करीब तीन घंटे के रेस्क्यू के बाद मलवे के नीचे मजदूर के शव को बाहर निकाला गया। पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दी। मृतक मजदूर की पहचान अशोक साहनी के रूप में हुई। वह कुशीनगर जिले के कप्तानगंज थानाक्षेत्र के खभशार टोला करनहवा का रहने वाला था। इस हादसे में दीवार ढहने से सदारु, रामसुमेर व जवाहर घायल हुए हैं। वह तीनों मजदूर भी कप्तानगंज थानाक्षेत्र के खभशार टोला करनहवा का रहने हैं। घटना शनिवार सुबह साढ़े आठ बजे की है। उस समय करीब 21 मजदूर भट्ठे के अंदर से ईंट की निकासी कर रहे थे। भट्ठे दी करीब पन्द्रह–सोलह फीट ऊंची दीवार जर्जर हो गई थी। ईंट की निकासी के दौरान दीवार भरभरा कर गिरने लगी। इससे मजदूरों में भगदड़ मच गई। जान बचाने के लिए मजदूर भागने लगे। कोई भी मजदूर सुरक्षा कवच नहीं पहने था। भट्ठे के अंदर होने से मजदूर अशोक साहनी को भागने का मौका नहीं मिला। वह दीवार के मलवे के नीचे

दब गया। तीन मजदूर सदारु, रामसुमेर व जवाहर भी घायल हो गए। अन्य मजदूर भाग कर अपनी जान बचा लिए। मलवे के नीचे दबे मजदूरों को निकालने के लिए रेस्क्यू आपरेशन शुरू किया गया। एसडीएम सदर रमेश कुमार व सीओ सदर आभा सिंह, भिटौली थाना के प्रभारी निरीक्षक पंकज गुप्ता मौके पर पहुंचे। करीब तीन घंटे तक मलवा हटाने का काम जारी रहा। उसके बाद अशोक साहनी का शव मिला।

मलवे से मजदूर अशोक के शव मिलने की जानकारी मिलते ही परिजन बिलखने लगे। उस समय भारी संख्या में भीड़ मौके पर जमा हो गई। परिजन व भीड़ भट्ठे के अंदर जाने का प्रयास शुरू कर दिए। बड़ी संख्या में महिलाएं भी थीं। सीओ सदर आभा सिंह महिला पुलिस कर्मियों के साथ महिलाओं को रोकने का प्रयास करने लगीं। सीओ का कहना था कि शव को दिखा जाएगा। परिवार की महिलाएं शव देखने के लिए परेशान थीं। बड़ी मशक्कत के बाद पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजी। घटना की जानकारी मिलने पर डीएम अनुनय झा व एसपी सोमेन्द्र मीना घटना स्थल पर पहुंचे। दोनों अधिकारी ईंट भट्ठा निरीक्षण किए। ईंट–भट्ठा 27 साल पुराना है। मरम्मत के अभाव में दीवार में दरारें देखने को मिलीं। चिमनी में भी दरारें पड़ी हुई हैं। निरीक्षण के बाद डीएम अनुनय झा ने बताया कि आपदा के तहत अनुमन्य धनराशि पीड़ित परिवार को दी गई है। इसके अतिरिक्त कृषक दुर्घटना बीमा के तहत राहत सहायता मिलेगी। श्रम विभाग के तहत अनुमन्य राहत धनराशि भी पीड़ित परिवार को दी जाएगी। डीएम ने बताया कि प्रथम दृष्टया ईंट–भट्ठा मालिक की लापरवाही प्रतीत हो रही है। मैंटिनेंस का कार्य नहीं कराया गया है। प्रकरण की जांच कराई जाएगी। जो भी दोषी मिलेगा उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

पानी की तलाश में गांव पहुंचा हिरनों का झुंड, कुत्तो का हमला

संवाददाता–गोण्डा। भीषण गर्मी के महीने में नदी ,तालाब और जलाशय सूख गए हैं। जिससे पानी की तलाश में वन्य जीव बस्तियों तक पहुंच रहे हैं। बस्तियों में पहुंचे वन्य जीव को कुत्तों ने नोच कर घायल कर दिया। जिसकी सूचना गांव के लोगों ने वन दरोगा देवनारायण पांडेय को दी। वन दरोगा ने मौके पर पहुंचकर हिरन को ले जाकर प्राथमिक उपचार कराया। पड़री कृपाल रेंज के डढवा दसोतिया गांव में पानी की तलाश में हिरन का झुंड पहुंच गया। जिसे देखते ही गांव के कुत्तों ने दौड़ा लिया। उनमें से एक हिरन अकेला छूट गया। जिसेअकेला पाकर कुत्तों ने घेर लिया और नोंच कर घायल कर दिया । हिरन की आवाज सुनकर गांव के लोग एकत्रित हुए और कुत्तों के हमले से उसे छुड़वाया । इसके बाद में इसकी सूचना क्षेत्र के वन दरोगा को दी। उन्होंने मौके पर पहुंचकर हिरन का प्राथमिक उपचार अस्पताल ले जाकर कराया । उन्होंने बताया कि इससे पहले मोतीगंज के पास नौ डिहवा गांव में कुत्तों ने हमला करके एक हिरन शुक्रवार को घायल कर दिया था। जिसका इलाज करा कर उसे जंगल में छोड़ दिया गया है ।बताया जा रहा है कि पानी की तलाश में वन्य जीव इन दिनों भटक रहे हैं। यही कारण है कि वन्य जीव जंगल से बस्तियों में पहुंच रहे हैं और कुत्तों का शिकार बन रहे हैं। हालांकि शासन और प्रशासन से पंचायत के तालाब में पानी भरने के निर्देश दिए गए हैं। अभी तक स्थिति ऐसी है कि किसी पंचायत के तालाब में पानी नही भराया गया है। जिससे पशु–पक्षी इधर–उधर एक–एक बूंद पानी के लिए भटक रहे हैं । यही नहीं शासन के सख्त निर्देश के बाद भी अधिकारी लापरवाह बने हुए हैं। नहरों में नहीं छोड़ा पानीस शासन के सख्त निर्देश के बावजूद अभी तक दर्जनों नहर ऐसी हैं ,जिनमें विभाग की तरफ से पानी नहीं छोड़ा गया है ।जिससे बूंद बूंद पानी के लिए पशु–पक्षी बेहाल है और इधर–उधर भटक रहे हैं। यही कारण है कि वन्य जीव पानी की तलाश में रात में निकलते हैं तो बस्तियों में पहुंचने पर कुत्तों का शिकार हो जाते हैं। ग्रामीणों ने तालाबों को भरवाने और नहरों में पानी छोड़ने की मांग की है।

कपिलमुनि पहुंची चौरासी कोसी यात्रा, लोगों ने किया स्वागत

संवाददाता–गोण्डा। अवध पुरी की तीन परम्परागत परिक्रमाओं में सबसे बड़ी चौरासी कोसी परिक्रमा शनिवार की सुबह महंगूपूर गांव के प्राचीन सरयू – कुटिला नदी की संगम सथली के तट पर स्थित कपिलमुनि मंदिर पहुंची। विश्व हिन्दू परिषद के हनुमान मंडल के संयोजन में बीते 18 दिनो से चल रही साधु सन्तों की यह परिक्रमा अब अपने अन्तिम चरण मे पहुंच गई है। शुक्रवार को तुलसीपुर माझा मे रात्री विश्राम के बाद शनिवार के सुबह जय श्रीराम के उद्घोष और भजन कीर्तन करते हुए परिक्रमार्थी ढेमवा रोड पर चलते हुए महंगूपुर गांव पहुंची । शिक्षक नेता सुशील पाण्डेय की अगुवाई में ग्रामीणों ने साधू संतो का स्वागत करते हुए जलपान कराया गया , इसके बाद मन्दिर परिसर में पहुंचे परिक्रमार्थियों ने सबसे पहले कपिल मुनि का दर्शन पूजन किया। पूर्व प्रधान नवनीत पाण्डेय की अगुवाई में सभी संतो को दोपहर का भोजन और शाम का नाश्ता कराया गया। त्रि विश्राम के बाद रविवार की सुबह यात्रा नवाबगंज के नगवा के रास्ते रेहली गांव होते हुए मखौडा धाम के लिए प्रस्थान करेगी। तुलसीपुर माझा में प्रधान लालजी सिंह के अगुवाई में

सैकड़ों गांव वालों ने यात्रा का स्वागत किया। रोड के किनारे स्थित पहलवान के चक्की सुरेश सिंह, रिशु सिंह समेत गांव वालों के सहयोग सन्तों के भोजन और रात्री विश्राम का प्रबन्ध किया गया था। चिकित्सा सेवा के लिए एम्बुलेंस के साथ नवाबगंज सीएचसी की टीम मौके पर मुस्तैद रही। यात्रा के शामिल एक साधु की तबीयत ज्यादा बिगड़ जाने पर सीएचसी में दाखिल कर उनका उपचार किया गया। परिक्रमा यात्रा की दो और जत्थे अगले एक दो दिन मे पहलवान वीर मंदिर परिसर मे पहुंचने वाली है। हनुमान मंडल के परिक्रमा प्रमुख सुरेंद्र सिंह यात्रा के दौरान स्थानीय पुलिस की लापरवाही पर बेहद नाराज दिखे. कपिल मुनि मंदिर पर उन्होंने कहा कि तुलसीपुर में यात्रा के साधु संतो का रोड के किनारे ही पडाव था इसके बावजूद वहा जब यात्रा पहुंची तो कोई भी पुलिस कर्मी मौजूद नहीं था, जबकि यात्रा शुरु होने पूर्व ही जिले के अधिकारियों को यात्रा के रुट और समय की सूचना दे दी गई थी। अधिकारियों के निर्देश के बाद दो सिपाही मौके पर पहुंचे जो कुछ देर नदारद हो गए। शनिवार की सुबह भी ढेमवा रोड से यात्रा के दौरान कोई स्थानीय पुलिस कर्मी मौजूद नहीं था । श्री सिंह ने कहा कि पुलिस के इस लापरवाही की लिखित शिकायत उच्चाधिकारियों से करेगें।

निकास द्वार विस्तार के लिए गद्दी नशीन महंत प्रेमदास ने किया भूमि पूजन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या।अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर सिद्ध पीठ हनुमानगढ़ी के निकास द्वार पर भूमि पूजन करते हुए हनुमानगढ़ी के गद्दीनशीन महंत प्रेमदास महाराज के बताया कि निकास द्वार का विस्तार किया जा रहा है जिसमें रामनगरी में आने वाले श्रद्धालुओं को बहुत सुविधा मिलेगी। महाराज जी के शिष्य महंत डॉ महेश दास महाराज ने बताया कि अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर गुरुदेव भगवान महंत प्रेम दास महाराज ने भूमि पूजन करके विस्तार की अनुमति प्रदान की। अब निकास द्वार पहले से दुगना हो जाएगा जिससे हनुमानगढ़ी पर दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा मिलेगी। उन्होंने बताया कि श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या में श्रद्धालुओं की संख्या कई गुना बढ़ गई है और प्रतिदिन लाखों की संख्या में श्रद्धालु हनुमानगढ़ी पर की हनुमान जी महाराज के दर्शन के लिए आते हैं उन्हें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता हैं, श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पहली बार हनुमानगढ़ी पर निकास द्वार को चौड़ा किया गया है और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए लिफ्ट भी बनकर तैयार जिससे वृद्ध समर्थ व्यक्ति भी हनुमान जी महाराज का दर्शन पूजन कर सकेंगे। हनुमानगढ़ी पर अखाड़े द्वारा आने वाले समय में और विस्तार किया जाएगा। भूमि पूजन के दौरान समस्त पंचांग मौजूद रहे।

दुर्वासा आश्रम में श्री परशुराम भगवान का मनाया गया प्राकट्योत्सव

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। श्री राम नगरी के दुर्वासा आश्रम में स्थित परशुराम मंदिर में श्री परशुराम भगवान का प्राकट्योत्सव अक्षय तृतीय नामक विजया तिथि में धूमधाम से मनाया गया,सर्व प्रथम दुग्धाभिषेक के उपरांत पुष्प एवं तुलसी दल से अर्चन किया गया मालपूआ के साथ विविध प्रकार के फलों का भोग लगाकर प्रसाद वितरण किया गया । विद्वत्ता गोष्ठी को संबोधित करते हुए मंदिर अधिष्ठाता आचार्य श्रवण कुमार मिश्र ने महाभारत ग्रंथ का उदाहरण देते हुए कहा की जब दशरथ जी ने अपने चारों पुत्रों का विवाह करके अयोध्या आगमन किया उसी समय भगवान परशुराम भी वहां पधारे दशरथ जी के आदेश अनुसार श्री राम जी ने भगवान परशुराम जी का अभिनंदन किया परशुराम जी ने राम जी को वैष्णो धनुष प्रदान करते हुए कहा इस धनुष को झुकाओ क्रमशः प्रत्यंचा चढ़ाओ डोरी को खींचे परशुराम जी के आदेश अनुसार श्री राम ने सब कर दिया पुनः परशुराम जी ने श्री राम जी को दिव्या बाण देकर कहा कि मुझ पर बाण चलाओ उनकी वाणी की गरिमा रखते हुए श्री राम ने बाण चलाया परंतु वह बाण परशुराम जी तक पहुंचा नहीं पाया अपितु वह परशुराम जी के दिव्य तेज में उलझ गया एवं उनकी तेज को पीकर वापस आ गया देश की रक्षा के लिए परशुराम जी ने अपना धनुष बाण और तेज श्री राम को प्रदान किया और स्वयं तप के लिए चले गए अतः उन्होंने बताया कि भगवान परशुराम के इस परम उदारता एवं त्याग तपस्या को देखकर ही अयोध्या के अभ्युदय के लिए हमने मंदिर में श्री परशुराम भगवान की प्रतिष्ठा की। इस विद्वत्ता गोष्ठी में डॉक्टर कृष्ण कुमार पांडे ,डॉक्टर मनमोहन सरकार ,कुलभूषण ,वसंत कुमार मिश्र ,राम चरित्र तिवारी, संतोष पांडे, रमाकांत तिवारी ,अजय पांडे ,पूर्णानंद मिश्रा, आदि विद्वानों ने भगवान परशुराम जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

निशुल्क चिकित्सा शिविर में छात्र छात्राओं ने कराया स्वास्थ्य परीक्षण

संवाददाता–गोण्डा। शहर के एलबीएस पीजी कॉलेज के विज्ञान परिसर में शनिवार को जैनश इनीशिएटिव्स की ओर से निशुल्क चिकित्सा स्वास्थ शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में संस्था के संस्थापक डॉ. पंकज कुमार श्रीवास्तव ने मरीजों के उपचार के दौरान कहा कि पहले के समय में हृदय की बीमारी बहुत कम होती थी। वहीं अब कोरोना महामारी के बाद वृद्धों से ज्यादा समस्या युवाओं में पाई जाती है। डॉ. पंकज कुमार श्रीवास्तव को कॉलेज प्रबंध समिति के सदस्य मनोनीत किया गया है। चेस्ट फिजिशियन डॉ. एके उपाध्याय ने कहा कि इस समय देश में 40–69 साल के आयु वर्ग में होने वाली मौतों में से 45: मामले दिल की बीमारियों से होते हैं। डॉ. आलोक अग्रवाल ने कहा कि हृदय रोग लाइफस्टाइल में हो रहे बदलाव डायबिटीज, मोटापा, हाई ब्लड प्रेशर और खराब कोलेस्ट्रॉल जैसी बीमारियां बेहद तेजी से बढ़ रही हैं। शिविर में एलबीएस प्राचार्य प्रो. रविंद्र कुमार पांडे और प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष वर्षा सिंह, सचिव उमेश शाह ने सभी चिकित्सकों को बेहतर कार्य के लिए सम्मानित किया। शिविर में डॉ. पियूष रंजन, डॉ. पुनीत श्रीवास्तव, डॉ. अंजू अग्रवाल ने बीमारियों से बचाव के तरीके बताते हुए परामर्श दिए है। पंकज सिन्हा ने बताया कि शिविर में सैंकड़ों छात्र छात्राओं और अभिभावकों का निशुल्क परामर्श देते हुए संबंधित का ईसीजी, शुगर, आंखों की जांच निशुल्क की गई है। इस दौरान प्रो. जितेंद्र सिंह, प्रो. वीपी सिंह, प्रो. रेखा शर्मा, प्रो. संतोष श्रीवास्तव डॉ. राजीव अग्रवाल, सुषमा त्रिपाठी, विष्णु मोदी संजू छाबड़ा मौजूद रहे।

नेपाल सीमा सील

संवाददाता–गोण्डा। लोकसभा चुनाव को लेकर भारत–नेपाल सीमा पर सतर्कता बढ़ गई है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी के आदेश पर शुक्रवार की शाम से ही इंडो– नेपाल बार्डर सील होने का आदेश हो गया है। आवश्यक सेवाओं के अलावा मानवीय आधार पर छिटपुट आवागमन जारी है। भारतीय क्षेत्रों में काम करने वाले नेपाली कामगारों को आईडी देखकर व सघन चेकिंग कर छोड़ा जा रहा है। भारतीय क्षेत्र से नेपाल में शादी के लिए जाने वाली बारातों को गहन जांच के बाद एक– एक कर नेपाल जाने दिया जा रहा है। एसएसबी की 42वीं वाहिनी रुपईडीहा बीओपी पर ड्यूटी कर रही इंस्पेक्टर अनिता कुमारी अपने मातहतों के साथ जांच में सहयोग कर रही हैं। नेपाल से आने वाले भारत में प्रवेश कर रहे लोगों के सामानों की डॉग स्क्वायड जांच कर रहा है। एक– एक कर लोगों की आईडी देखकर मजदूरी के लिए बाहर जाने वाले नेपाली नागरिकों को छोड़ा जा रहा है। बार्डर पर आने– जाने वालों की भीड़ लगी हुई है।

युवाओं के प्रेरणा स्रोत थे गुरुदेव भगवान –सर्वेश्वर दास शरद

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। अयोध्या के प्रतिष्ठित श्री राजगोपाल मंदिर के पूर्वाचार्य महंत कौशल किशोर शरण फलाहारी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि पर अयोध्या के सभी संतो महंतों ने श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि श्री महाराज जी मूर्धन्य विद्वान थे और सनातन संस्कार वैष्णव परंपरा के संरक्षण के साथ–साथ समालोचक भी थे। श्री महाराज जी निरंतर अपने अमृतमई वचनों द्वारा समाज को नई दिशा देने का कार्य करते रहते थे युवा संतो के साथ–साथ युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत थे क्योंकि युवाओं को तार्किक उत्तर अयोध्या में श्री महाराज जी द्वारा ही मिलता था महाराज जी के अयोध्या ही नहीं बल्कि देश में अनेकों शिष्य हैं जो समाज को उनके पदचिन्हों चलते हुए नई दिशा देते रहते हैं। संतों का स्वागत महंत सीताराम शरण दास और अधिकारी सर्वेश्वर दास शरद जी महाराज ने किया।

गुरुदेव भगवान को याद करते हुए सर्वेश्वर दास महाराज ने बताया कि श्री गुरुदेव भगवान हमारे ही नहीं बल्कि हमारे जैसे हजारों युवाओं के आदर्श थे और जब कहीं समाधान नहीं मिलता था तो गुरुदेव भगवान के पास सभी प्रश्न का उत्तर होता था कभी भी कोई व्यक्ति यहां से निराश होकर के नहीं गया कि उसके प्रश्न का उत्तर तार्किक सामाजिक एवं धार्मिक रूप से ना मिला हो आज गुरुदेव भगवान की प्रथम पुण्यतिथि पर अयोध्या के साथ–साथ पूरे देश से संत महंत शिष्य पारिकर आए जिनका स्वागत सम्मान किया गया। श्री महाराज जी की श्रद्धांजलि सभा में मणिरामदास छावनी उत्तराधिकारी महंत कमलनयन दास, तीन कलसा तिवारी मंदिर के महंत महापौर गिरीशपति त्रिपाठी,हनुमत सदन महंत अवधकिशोर शरण, बड़ाभक्तमाल महंत अवधेश कुमार दास, तपस्वी छावनी पीठाधीश्वर जगद्गुरु परमहंसाचार्य, महंत विवेकाचारी, चौबुर्जी महंत बृजमोहन दास, सरपंच रामकुमार दास, महंत बलराम दास, डाड़िया महंत गिरीश दास, महंत अर्जुन दास, जानकी कुंज महंत वीरेंद्र दास, महंत रामबिहारी शरण, महंत आशुतोष दास, महंत सीताराम दास, महंत रामलोचन शरण, महंत वीरेंद्र दास, महंत रामप्रिया शरण, महंत गंगादास, स्वामी छविरामदास दास सहित सैकड़ो संतो महंत ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत की प्रेस कांफ्रेंस के बीच हंगामा, नेताओं ने दिखाई नाराजगी

संवाददाता–महराजगंज। कांग्रेस गठबंधन की बैठक में हंगामा हो गया। दो नेता आपस में छिटाकशी को लेकर नोकझोंक कर लिए। करीब 20 मिनट तक माहौल गर्म हो गया। सभी लोग एक दूसरे को समझाने में जुटे रहे। कड़ी मशक्कत के बाद माहौल शांत हो गया। एक नेता ने दूसरे नेता पर छिटकशी कर दी। इसे लेकर हंगामा हो गया। बाद में किसी तरह से माहौल शांत हो गया। इंडी गठबंधन की तरफ से कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत संग समाजवादी पार्टी के नेताओं संग प्रेस वार्ता होनी थी। इसके शुरू होने के पहले ही किसी बात पर सपा नेता भड़क गए और हंगामा करने लगे। इस बीच सपा नेता और कांग्रेस नेता एक दूसरे को मनाते नजर आए। इस दौरान दूर खड़ी सुप्रिया श्रीनेत हंगामे को देखते रहीं। करीब 20 मिनट बाद सुप्रिया श्रीनेत ने अपनी प्रेस वार्ता शुरू की। कहा, तीन चरण का मतदान हो चुका है और एक बात शीसे की तरह साफ है। वो है कि 1 तारीख को नरेंद्र मोदी पीएम नहीं बनेंगे और भाजपा की सरकार नहीं बन रही है।

स्कूली वैन पेड़ से टकराया, कई बच्चे घायल

संवाददाता–देवरिया। शनिवार को बच्चों को स्कूल लेकर आ रहा एक स्कूली वैन पेड़ में टकरा गया। इसमें दो छात्राएं गंभीर रूप से घायल हो गई। इसमें एक का हाथ टूट गया, जबकि दूसरी छात्रा के गर्दन और सिर में चोट आई है।

वहीं आधा दर्जन बच्चों को मामूली खरोच आई हैं। गंभीर रूप से घायल दो बच्चियों का प्राइवेट अस्पताल में इलाज चल रहा है। जबकि अन्य बच्चों को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया।

शनिवार की सुबह शहर के सीसी रोड स्थित प्रेम जागृति विद्या पीठ का वाहन स्कूली बच्चों को लेने सरौरा की तरफ गया था। वह बच्चों को लेकर स्कूल आ रहा था। इस दौरान रूद्रपुर रोड पर सरौरा चौराहे के पास स्कूली वाहन पेड़ से टकरा गया। इसमें आधा दर्जन से अधिक बच्चियां घायल हो गई। इस घटना

में जोकहां निवासी नंदिनी का हाथ टूट गया, जबकि इसी गांव निवासी अर्चना के गर्दन और सिर में गंभीर चोट आई हैं। हादसे के बाद वैन में सवार बच्चों में चीख पुकार मच गई।

राहगीरों की मदद से बच्चों को बाहर निकाला गया। घटना की सूचना मिलने पर विद्यालय कर्मियों ने सभी घायल बच्चों को शहर के प्राइवेट अस्पताल में लाया गया। जहां पर नंदिनी और अर्चना को छोड़कर अन्य शेष बच्चों को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया। जबकि उक्त दोनों बच्चियों का प्राइवेट अस्पताल में इलाज चल रहा है। थानाध्यक्ष सुरौली अनिल कुमार ने बताया कि प्रेम जागृति विद्यापीठ की स्कूल वैन अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई। वैन मे सत्रह बच्चे सवार थे। चार बच्चों को चोटें लगी, जिन्हें अभिवावक ईलाज के लिए देवरिया ले गए। तहरीर मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

सलमान खान के घर पर फायरिंग में गोरखपुर से भेजी गई थी पिस्टल

संवाददाता–गोरखपुर। एसटीएफ को शक है कि मुंबई में फिल्म अभिनेता सलमान खान के घर पर फायरिंग में लॉरेंस बिश्नोई गैंग के शूटरों ने जिस पिस्टल से फायरिंग की थी, उसकी सप्लाई गोरखपुर के शशांक पांडेय और मनीष कुमार यादव ने अपने एक अन्य अज्ञात साथी के साथ की थी। बृहस्पतिवार को मनीष के गिरफ्तार होने के बाद उससे सलमान के घर फायरिंग में प्रयुक्त पिस्टल के संदर्भ में भी पूछताछ की गई। दोनों शूटरों को पकड़े जाने के बाद एजेंसियां एक–एक तार को जोड़कर तह तक जाने में जुटी हैं। सलमान खान के मुंबई के बांद्रा स्थित घर गैलेक्सी अपार्टमेंट के सामने 14 अप्रैल की सुबह पांच बजे फायरिंग की गई थी। दोनों शूटर बाइक पर सवार होकर आए और पांच राउंड फायरिंग की। कुछ दिन बाद पुलिस ने गुजरात से दोनों शूटरों को गिरफ्तार कर लिया था। दोनों शूटर बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले के रहने वाले हैं। पुलिस ने उनको गिरफ्तार तो कर लिया, लेकिन पिस्टल बरामद नहीं कर पाई। सलमान खान के घर फायरिंग की जिम्मेदारी लारेंस बिश्नोई के भाई अनमोल के लेने के बाद एजेंसियां इनसे जुड़े लोगों की तफ्तीश में जुट गईं। लॉरेंस बिश्नोई गैंग को असलहा सप्लाई करने वाला गोरखपुर का शशांक पांडेय भी मूलतरू पश्चिमी चंपारण जिले का रहने वाला है। अंबाला एसटीएफ जांच की गहराई में गई तो शशांक से जुड़े मनीष कुमार यादव का नाम प्रकाश में आया। एसटीएफ ने उसका लोकेशन ट्रैस किया तो वह गोरखपुर में मिला। इसके बाद अंबाला एसटीएफ की टीम गोरखपुर पहुंची। यूपी एसटीएफ की मदद से बृहस्पतिवार की शाम को उसे गिरफ्तार कर लिया गया। शुक्रवार को अंबाला एसटीएफ उसको अपने साथ लेते गई। सूत्रों की मानें तो लारेंस बिश्नोई और गोल्डी बराड़ गैंग गोरखपुर समेत पूरे पूर्वांचल में अपनी जड़ें जमा चुका है। इसकी एक खास वजह यह भी है कि गोरखपुर के बदमाश बिहार से असलहों की तस्करी कर सिर्फ इस गैंग के ही नहीं पहुंचा रहे हैं, बल्कि देशभर में आपराधिक वारदातों को अंजाम देने के बाद इस गैंग के बदमाशों को पहले पूर्वांचल या गोरखपुर में पनाह मिल रही है। ऐसा इसलिए भी कि यहां से बदमाशों का नेपाल और बिहार भागना भी काफी आसान है। अभी कुछ महीने पहले ही गोल्डी बराड़ गैंग के तीन गुर्गों को पुलिस ने गोरखपुर में गिरफ्तार किया था। तीनों ने गोल्डी बराड़ के नाम पर चंडीगढ़ में एक व्यापारी से तीन करोड़ की रंगदारी मांगी थी। रंगदारी नहीं देने पर बदमाशों ने व्यापारी के घर पर फायरिंग भी की थी।

एसटीएफ गोरखपुर ईकाई के निरीक्षक सत्यप्रकाश सिंह ने बताया कि लारेंस बिश्नोई गैंग को शशांक पांडेय के साथ मिलकर असलहा सप्लाई करने वाले मनीष कुमार यादव को अंबाला पुलिस अपने साथ ले गई है। अंबाला एसटीएफ ने सलमान के घर पर हुई फायरिंग को लेकर भी मनीष से पूछताछ की है। शक है कि उसने ही गैंग को पिस्टल की सप्लाई की थी। एसटीएफ को शक है कि मुंबई में फिल्म अभिनेता सलमान खान के घर पर फायरिंग में लॉरेंस बिश्नोई गैंग के शूटरों ने जिस पिस्टल से फायरिंग की थी, उसकी सप्लाई गोरखपुर के शशांक पांडेय और मनीष कुमार यादव ने अपने एक अन्य अज्ञात साथी के साथ की थी।

चलती बाइक से लड़खड़ाकर गिरा युवक, मौके पर ही हुई मौत

संवाददाता–गोरखपुर। घोलघर इलाके में गणेश चौराहे के पास शनिवार की दोपहर में बाइक सवार युवक चलती बाइक से लड़खड़ाकर गिरा और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने युवक की पहचान कर घरवालों को सूचना दी और शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया। इंस्पेक्टर कैंट रणधीर मिश्र ने बताया कि युवक की पहचान गंगेश दत्त पाण्डेय के रूप में हुई है। दक्षिणी बेतियाहाता फलमंडी थाना रामगढ़ताल निवासी जटाशंकर पाण्डेय का 35 वर्षीय पुत्र गंगेश दत्त पाण्डेय शनिवार की दोपहर में करीब 12 अपनी दो पहिया वाहन से गणेश चौराहे के पास लड़खड़ा कर गिर गया। उसकी मौके पर मृत्यु हो गई। पास मिले पेपर के आधार पर परिवारीजनों को सूचना देकर पुलिस ने शव को कब्जा में लेकर पंचायतनामा की कार्यवाही कर पीएम के लिए भेज दिया।

डेढ़ सौ साल पुराना नीम का पेड़ गिरा, कार क्षतिग्रस्त

संवाददाता–गोरखपुर। आर्य नगर में जगदीश वस्त्रालय के सामने की गली में स्थित ड्रेस लैंड कंपाउंड में सुबह 6 बजे खड़ी गाड़ी पर नीम का विशाल पेड़ गिर गया। गनीमत यह रही कि हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ। वहीं कार क्षतिग्रस्त हो गया। इस दृश्य को देखकर लोगों में अफरातफरी का माहौल रहा। कंपाउंड और आसपास के रहने वाले लोग इस घटना से काफी सहमे हुए है। रास्ता बंद होने से सुबह बच्चों के स्कूल छूट गए। लोग इस बात को लेकर भी हैरान है कि बिना आंधी,तूफान के यह डेढ़ सौ साल पुराना पेड़ गिर कैसे। पेड़ गिरने से बिजली का तार भी टूट गया। जिस वजह से कई घरों में बिजली आपूर्ति ठप हो गई है। कंपाउंड में रहने वाली डॉक्टर भावना ने बताया कि यह कार मेरी है।

उन्होंने बताया कि इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ है। लेकिन कार को भारी क्षति पहुंची है। बताया कि पेड़ गिरने की तेज आवाज पर सुबह लोग अपने घर से बाहर निकले। लोगों द्वारा पेड़ गिरने की कई वजह बताई जा रही है। डॉक्टर भावना का कहना है कि जड़ खोखली होने से यह भारी पेड़ गिरा है। सालों से इसके नीचे बह रहे सीवरेज के गंदे पानी की वजह से पेड़ की जड़े खोखली हुई है। यह पेड़ लगभग डेढ़ सौ साल पुराना है।

बरेली से आया प्रेमी नाबालिग प्रेमिका को लेकर फरार

संवाददाता–गोरखपुर। गोरखपुर के हरपुर बुदहट थाना क्षेत्र की 16 वर्षीय किशोरी को लेकर बरेली का युवक फरार हो गया। बताया जा रहा है कि युवक और किशोरी की मोबाइल से बातचीत शुरु हुई. इसके बाद नजदीकियां बढ़ीं। फिर युवक किशोरी को सात मई को बहला फुसलाकर अपने साथ ले भागा। किशोरी के घरवालों के मुताबिक आरोपी कार्तिक बरेली में रहता है। तहरीर के आधार पर युवक पर पुलिस ने अपहरण का केस दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार हरपुर थाना क्षेत्र की किशोरी अपने परिजनों के साथ हरियाणा में रहती है। परिजनों के मुताबिक इसी बीच उसकी बरेली के युवक से किसी तरह संपर्क हो गया है। इसके बाद मोबाइल से दोनों के बीच बात–चीत शुरु हो गई। बात करते हुए पकड़े जाने पर किशोरी को अप्रैल माह में हरपुर–बुदहट स्थित गांव भेज दिया। इस बीच वह बरेली के प्रेमी से बातचीत करती रही। सात मई को वह घर छोड़कर अपने प्रेमी के साथ फरार हो गई। किशोरी को तीन दिन खोजने के बाद परिजनों ने हरपुर बुदहट थाने में सूचना दी।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा का गठन

–भारतीय बस्ती संवाददाता– बस्ती । जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बस्ती का त्रैवार्षिक चुनाव आचार्य सुरेश जोशी वैदिक प्रवक्ता अल्मोड़ा के नेतृत्व में आर्य निवास राजा बाजार बस्ती में सम्पन्न हुआ जिसमें प्रधान पद का दायित्व ओम प्रकाश आर्य और मंत्री पद का दायित्व हरिहर मुनि वानप्रस्थी को सौंपा गया। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष के रूप में श्री मनीष आर्य, उप प्रधान श्री सत्येंद्र वर्मा, उप मंत्री श्री राधेश्याम आर्य, आर्य वीर दल अधिष्ठाता श्री गिरिजा शंकर आर्य, पुस्तकाध्यक्ष उपेंद्र शर्मा, आय व्यय निरीक्षक शिवपूजन आर्य और जिला प्रचार मंत्री के रूप में विनोद कुमार उपाध्याय को दायित्व सौंपा गया।

संगठन में सदस्य के तौर पर सूर्य प्रताप सिंह, आनंद स्वरूप कौशल, चंद्र प्रकाश आर्य, राम प्रसाद आर्य, उपेंद्र शर्मा, अजय अग्निहोत्री, अशोक आर्य, ओमप्रकाश आर्य मगहर, हनुमान प्रसाद आर्य, गीता आर्य, संतोष कुमार, प्रेमचंद त्रिपाठी, राधेश्याम सिंह, बृज किशोर आर्य एवं सुरेंद्र शर्मा का सर्वसम्मति से चयन किया गया। नवनिर्वाचित प्रधान ओम प्रकाश आर्य ने जानकारी दी कि आचार्य सुरेश जोशी के नेतृत्व में 5 से 8 अक्टूबर 2024 में महर्षि दयानन्द की दो सौवीं जयंती के अवसर पर वृहद वैदिक सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा जिसमें राष्ट्रीय स्तर के वैदिक प्रवक्ता, भजनोपदेशक और आर्य वीर दल प्रशिक्षक हिस्सा लेंगे।

इस महोत्सव के लिए एक माह पूर्व से ही जन जागरण प्रारम्भ हो जायेगा। इस अवसर पर अलख निरंजन आर्य, ओंकार आर्य, संतोष आर्य, वशिष्ठ गोयल, प्रमोद गुप्ता, शिवनारायण, नवीन कुमार श्रीवास्तव, विश्वनाथ प्रसाद, बृजेश कुमार श्रीवास्तव, आनंद श्रीवास्तव, धर्मवंद्र सिंह, आदित्य नारायण गिरि, देवव्रत आर्य, नवल किशोर, शैलेंद्र प्रताप, अनूप कुमार त्रिपाठी, शिव प्रसाद तिवारी, राजेश कुमार, दिनेश कुमार, गणेश आर्य, राजवेंद्र, राजकुमार, गरुड़ ध्वज पाण्डेय, रत्नेश कुमार, रजनी मिश्रा, डॉक्टर शशिकला श्रीवास्तव सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

ससुराली जा रहे थे अंतिम संस्कार करने, पुलिस घाट से ले आई शव

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर थाना क्षेत्र के दतरंगवा गांव में एक महिला की शुक्रवार रात जहरीला पदार्थ खाने से मौत हो गई। ससुराली शनिवार को अंतिम संस्कार करने जोगिया कोतवाली के ककरही घाट पर पहुंचे ही थे कि सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतका के भाई ने तहरीर देकर ससुरालियों पर हत्या का आरोप लगाया है। जोगिया कोतवाली क्षेत्र के सजनी गांव निवासी राजाराम की बेटी रीता (30) की शादी सिद्धार्थनगर थाना क्षेत्र के दतरंगवा गांव निवासी पतिराम से हुई थी। शुक्रवार रात उसने कोई जहरीला पदार्थ खा लिया इससे उसकी मौत हो गई। सूचना पर मृतका के मायके से भी लोग शनिवार को पहुंच गए थे। इस बीच ससुराली शव का अंतिम संस्कार करने के लिए जोगिया कोतवाली क्षेत्र के ककरही घाट पर पहुंचे ही थे कि मृतका के भाई राधेश्याम ने डॉयल 112 को सूचना देकर घटना से अवगत करा दिया। मौके पर पुलिस ने पहुंच कर शव को अपने कब्जे में ले लिया और लेकर थाने पर चली आई। मृतका के भाई ने बहन की हत्या का आरोप लगाते हुए ससुरालियों के खिलाफ केस दर्ज करने की तहरीर दी है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। सदर थानाध्यक्ष गौरव सिंह ने बताया कि सूचना पर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम कराया जा रहा है। तहरीर मिली है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

आधी रात बिस्तर से उठकर देवर के कमरे में पहुंची भाभी, दोनों को एक साथ देखकर बौखताया पति

संवाददाता–गोरखपुर। एक महिला का पति के नौकरी पर जाने के बाद अपने रिश्ते के देवर पर दिल आ गया। पति को पत्नी की इस करतूत की जानकारी ही नहीं थी। पति छुट्टी पर घर आया था। शाम को पति–पत्नी दोनों अपने कमरे में सो गए। आधी रात को पति की नींद खुली तो बिस्तर से पत्नी को गायब देखा। पत्नी को ढूंढते–ढूंढते पति अपने छोटे भाई के कमरे के पास पहुंच गया। शक होने जब उसने कमरे का दरवाजा खोला तो दंग रह गया। पत्नी और उसका छोटा भाई आपत्तिजनक हालत में थे। पति ने जब इसका विरोध किया तो दोनों ने मिलकर उस पर हमला कर दिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है। मामला खजनी थाना क्षेत्र के एक गांव का है। जानकारी के अनुसार यहां के रहने वाले युवक की कुछ साल पहले शादी हुई थी। शादी के कुछ दिन बाद ही वह नौकरी करने के लिए दूसरे प्रदेश चला गया। घर पर उसकी पत्नी और रिश्ते का देवर रहता था। पति के जाते ही पत्नी की नजदीकियां देवर के साथ हो गईं। पति को इस बारे में भनक तक नहीं थी। तीन–चार दिन पहले पति छुट्टी लेकर घर आया था। पति अपनी पत्नी के साथ अपने कमरे में सो रहा था। आधी रात को अचानक से उसकी नींद खुली तो बिस्तर से पत्नी गायब मिली। शक होने पर वह सीधे रिश्ते के भाई के कमरे के पास पहुंचा। वहां युवक को कुछ आवाजें सुनाई दीं तो उसने दरवाजा खुलवाया। दरवाजा खुलते ही युवक के पैरों से मानो जमीन ही खिसक गई हो। युवक की पत्नी और उसका भाई दोनों आपत्तिजनक हालत में थे। युवक ने जब इस रिश्ते का विरोध किया तो उसकी पत्नी और भाई ने रॉड से हमला कर दिया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। घर में चीख–पुकार की आवाज सुनकर परिवार के अन्य लोग भी जाग गए और पुलिस को सूचना दी। गांव के लोगों ने बताया कि महिला के दूसरे व्यक्ति के साथ प्रेम–प्रसंग की बात पूरे गांव में फैलने लगी थी। इसके बाद उसका पति अपे साथ नौकरी पर ले गया था, लेकिन यहां भी वह सही तरीके से नहीं रह रही थी तो दोबारा से महिला को उसका पति गांव छोड़ गया था। इस बार पति ने पत्नी को उसके प्रेमी के साथ रंगे हाथों पकड़ लिया। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

बंजर जमीन से बहे नाला को बताया अपनी भूमि और बेच डाला

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। राजस्व अभिलेख में बंजर दर्ज जमीन से होकर नौगढ़–उस्का मार्ग पर पकड़ी चौराहा से आगे बहने वाले नाला को दो भाइयों ने अपनी जमीन दिखा कर दूसरे के हाथ बेच डाला। पूर्व विधायक विजय पासवान ने शनिवार को डीएम से मिलकर मामले की जांच कर कार्रवाई की मांग की है। नौगढ़–उस्का मार्ग पर पकड़ी चौराहा से आगे जल निकासी के लिए एक नाला बहा हुआ है जो सरकारी जमीन में है। उसे पाट कर अपनी जमीन बता कर उस्का बाजार क्षेत्र के पकड़ी डिहवा निवासी दो भाइयों ने कुछ दिन पूर्व सिद्धार्थनगर थाना के ईदगाह रोड बेलसड़ निवासी अशफाक अहमद पुत्र मोहम्मद इस्लाम के हाथ बेच दिया। इसकी जानकारी बगल में स्थित जमीन के स्वामी रवि पासवान पुत्र राजदेव पासवान निवासी गदामरवा को हुई तो एसडीएम से शिकायत की। एसडीएम के निर्देश पर दो मई को नायब तहसीलदार ने मौका मुआयना किया। उन्होंने जांच के बाद अपनी रिपोर्ट में उस जमीन को बंजर बताते हुए लिखा है कि उससे होकर नाला निकला है। आगे की कार्रवाई एक सप्ताह बाद भी नहीं होने पर पूर्व विधायक विजय पासवान ने डीएम से मिल कर कार्रवाई की मांग की। उन्होंने कहा कि अगर कार्रवाई नहीं हुई तो जल निकासी का संकट खड़ा हो जाएगा।

दाम चढ़ने की उम्मीद में गेहूं बेचने से परहेज कर रहे किसान

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले के मेंहदावल क्षेत्र में संचालित गेहूं क्रय केन्द्रों के साथ–साथ प्राईवेट दुकानों पर भी सन्नाटा पसरा हुआ है। सरकारी खरीद से ऊपर बाजार भाव का पहुंचने से जहां किसान क्रय केन्द्रों से दूरी बना लिए है। वहीं बाजार भाव चढ़ने के इंतजार में प्राईवेट दुकानों पर भी इक्का–दुक्का किसान ही पहुंच रहे हैं। मेंहदावल क्षेत्र में गेहूं की कटाई का काम समाप्त हुए एक पखवारा से अधिक का समय बीत गया। लेकिन गेहूं क्रय केन्द्रों पर खरीदारी ठप पड़ी है। हालात यह हो गए हैं कि बाजार भाव 2 हजार 350 रूपए प्रति कुंतल पहुंच गया है। जो सरकारी खरीद से ऊपर है। ऐसे में निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष खरीददारी होने पर संशय खड़ा हो गया है। आढ़तियों द्वारा सरकारी दाम के ऊपर गेहूं की खरीद करने तथा नकद भुगतान किए जाने से किसान क्रय केन्द्र दूरी बना लिए हैं। हालांकि प्राईवेट दुकानों पर भी खरीद सुस्त पड़ी है। केवल जरूरतमंद किसान ही गेहूं बेच रहे हैं।

पिछले सीजन में गेहूं का दाम तीन हजार रूपए से ऊपर पहुंचने की वजह से अधिकतर किसान दाम चढ़ने का इंतजार कर रहे हैं। किसान द्वारिका, श्रीराम, राम अवध यादव, पन्नालाल, रामसमुझ ने कहा कि अभी धान के फसल की तैयारी में समय बचा हुआ है। ऐसे में खेती–किसानों के लिए धन की आवश्यकता नहीं है। बाजार भाव में बनी तेजी से ऐसा लग रहा है इस बार भी गेहूं का रेट चढ़ेगा। दाम बढ़ने के उम्मीद में हम सभी उपज को सुरक्षित करके रखे हुए हैं।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगद इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

वाद सं0

धारा 38 उ0प्र0रा0स0 2006

अदालत– श्रीमान उप जिलाधिकारी महोदय (प्रशासनिक) भानपुर जिला बस्ती

बृजेश नरायन सिंह

बनाम

बाबा बासदेव सिंह महाविद्यालय साकिनान पिपरा जप्ती तप्पा सिकन्दरपुर परगना बस्ती पूरव तहसील भानपुर जिला बस्ती

1. बाबा बासदेव सिंह महाविद्यालय व बाबा बासदेव सिंह ऐजुकेशनल मुख्य ट्रस्टी सचिव प्रबंधक प्रदीप कुमार पुत्र सोमनाथ सिंह साकिन संसारपुर तप्पा सिकन्दरपुर परगना बस्ती पूरव तहसील भानपुर जिला बस्ती

तारीख पेशी 16–05–2024

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 16 माह 05 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सरश्ता हो जो कि जबाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बरसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 09 माह 05 सन 2024 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब

(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

मूलवाद सं0 74/2022

अदालत–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद बस्ती जिला–बस्ती

मुन्नीलाल

बनाम

मालती आदि

1. मालती उम्र 48 वर्ष पत्नी सत्य नरायन ग्राम सोभनपार तप्पा बडगोपगार परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला–बस्ती 2. मृदुला आयु 46 वर्ष पुत्री कृष्णा प्रसाद ग्राम सोभनपार तप्पा बडगोपगार परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 22–07–2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 22 माह 07 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सरश्ता हो जो कि जबाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोस मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बरसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

विज्ञप्ति

सर्वसम्बन्धित को सूचित किया जाता है कि लोकसभा चुनाव 2024 (सामान्य निर्वाचन) को सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु चुनाव से पूर्व प्राप्त केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बल/पीएसी/पुलिस बल/ होमगार्ड को ठहरने हेतु आवश्यक सामाग्री के लिए एवं पुलिस लाइन, बस्ती में ब्रिफिंग/ कर्मियों के मतदेय स्थल पर प्रस्थान करने व ठहरने हेतु आवश्यक सामाग्री किराये पर लिए जाने हेतु अल्पकालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा प्राप्तकर्ता द्वारा निविदा पुलिस कार्यालय, बस्ती में दिनांक 15.05.2024 को 12.00 बजे तक फार्म प्राप्त करेगें तथा उसी दिन समय–02.00 बजे तक मेरे द्वारा प्राधिकृत अधिकारी के समक्ष डाली जायेगी। तथा डाली गयी निविदा को उसी दिन प्राधिकृत अधिकारी द्वारा खोली जायेगी। इसके अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए पुलिस अधीक्षक, कार्यालय, बस्ती में उपस्थित होकर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकतें हैं।

(गोपाल कृष्ण चौधरी)

पुलिस अधीक्षक

बस्ती।

40 स्थानों पर ठहराए जाएंगे चुनाव में आने वाले सुरक्षा कर्मी

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले में छठें चरण में 25 मई को मतदान होगा। नामांकन की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है और 11 प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं। प्रत्याशियों ने प्रचार में पूरी ताकत झोंक दी है। वहीं दूसरी तरफ प्रशासन शांतिपूर्ण माहौल में चुनाव कराने को कटिबद्ध हैं। बाहर से आने वाले फोर्स और पुलिस कर्मियों को ठहराने के लिए 40 जगहों को प्रशासन ने चिन्हित करके तैयारी पूर्ण कर लिया हैं। जनपद में चुनाव कराने के लिए बाहर से पुलिस फोर्स आवंटित हुआ है। इसमें 212 इंस्पेक्टर व सब इंस्पेक्टर, 2598 शस्त्रस मुख्य आरक्षी व आरक्षी,291 निरूशस्त्र पुलिस कर्मी और 2581 होमगार्ड का आवंटन हुआ हैं। इसमें बाराबंकी से 20 इंस्पेक्टर व सब इंस्पेक्टर, 912 शस्त्र पुलिस कर्मी और 15 निरूशस्त्र पुलिस कर्मी मिल रहे हैं। जबकि रायबरेली से 39 इंस्पेक्टर व सब इंस्पेक्टर, 568 शस्त्र पुलिस कर्मी आवंटित हुए है। मेरठ से 153 इंस्पेक्टर व सब इंस्पेक्टर, 1118 शस्त्र पुलिस कर्मी मिल रहे है।

यूपी एसएसएफ 2 बीएन गोरखपुर से 156 निःशस्त्र पुलिस कर्मी मिलेगें। यूपीएसएफ 4 बीएन मथुरा से 120 निरूशस्त्र पुलिस कर्मी मिलेगे। रामपुर से 502,अलीगढ़ से 935,हाथरस से 300, महराजगंज से 465,फिरोजाबाद से 100 और संतकबीरनगर से 279 होमगार्ड चुनाव ड्यूटी करेंगे। इसके अलावा 12 कंपनी और दो प्लाटून सीएपीएफ और एक कंपनी व एक प्लाटून पीएसपी मिल रही हैं।

जिले के 40 स्थानों पर फोर्स को ठहराने की व्यवस्था हुई है। इनमें एचआरपीजी कॉलेज खलीलाबाद, प्रभादेवी डिग्री कॉलेज खलीलाबाद, महामाया पालीटेक्निक स्कूल बघौली, एनएन पब्लिक स्कूल सोनौरा गौसी दुधारा, तारावंद डिग्री कॉलेज मिठना धनघटा, पंडित सूर्य नारायन पीजी कॉलेज नाथनगर महुली, शोहराब इंटर कॉलेज परसौना महुली, प्रेम लता महाविद्यालय अछिया मेंहदावल, सरदार पटेल डिग्री कॉलेज कोपिया बखिरा, मोहन इनसीरा महाविद्यालय जंगल बेलहर, राजकीय पालीटेक्निक सिरसी इनघटा, सूर्या कॉलेज ऑफ एजुकेशन मीरगंज, प्रभादेवी इंटर कॉलेज खलीलाबाद, संतकबीर आचार्य राम विलास इंटर कॉलेज मगहर, संतकबीर आचार्य विद्यापीठ डिग्री कॉलेज मगहर, ब्लूमिंग बड्स हायर सेकेंड्री स्कूल औद्योगिक क्षेत्र खलीलाबाद, अंबा केपीएस वीपी कॉलेज ऑफ एजुकेशन हरिहरपुर महुली, एपीएन डिग्री कॉलेज डुमरी हरिहरपुर, विमला देवी शैला बालिका इंटर कॉलेज भगता, दोआबा शिक्षा सदन इंटर कॉलेज शनिचरा धनघटा, सनाविल गर्ल्स इंटर कॉलेज मूडाडीहा बेग दुधारा, एआरसी डिग्री कॉलेज मूडाडीहा दुधारा, नेशनल इंजंटर कॉलेज मूडाडीहा दुधारा, नरपति सिंह महाविद्यालय उजरौटी कला दुधारा, जनता वैदिक महाविद्यालय कुबेरनाथ मंदिर मेंहदावल, प्रेमलता बालिका इंटर कॉलेज अछिया मेंहदावल, वेणी माधव गोपीनाथ इंटर कॉलेज बखिरा, गिरजा देवी सरस्वती देवी इंटर कॉलेज छहना बखिरा, गन्ना विकास उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खलीलाबाद, नेहरू कृषक इंटर कॉलेज मडया खलीलाबाद, भगवती इंटर कॉलेज बनियाबारी, एएच एग्री इंटर कॉलेज दुधारा, लोक मान्य बालगंगाधर तिलक कन्या इंटर कॉलेज झुड्या, साधू शरण कालिका प्रसाद इंटर कॉलेज हरिहरपुर, माउंट वेली एकेडमी मोहनलालपुर मगहर, विवेकानंद हॉयर सेकेंड्री स्कूल इनघटा, बाल विद्या मंदिर प्रसादपुर इनघटा, शंकर देई डिग्री कॉलेज इनघटा, जीपीएस पीजी कॉलेज खलीलाबाद शामिल हैं।

एएसपी शशिशेखर सिंह ने बताया कि बाहर से आवंटित पुलिस फोर्स को ठहराने के लिए 40 जगह व्यवस्था की गई हैं। फोर्स को कोई असुविधा न हो, इसके लिए अनुमन्य सुविधाएं मुहैया कराई जाएंगी। इसके लिए पहले से तैयारी कर ली गई हैं।

प्ररूप सी–1

(समाचार पत्र, टी.वी. मे प्रकाशन हेतु अभ्यर्थियों के लिए)

आपराधिक मामलो के बारे में घोषणा

(वर्ष 2011 की रिट याचिका (सिविल) सं0 536 में माननीय उच्चतम न्यायालय के दिनांक 25 सितम्बर 2018 के निर्णय के अनुसार) (पब्लिक इंटरेस्ट फाउंडेशन और अन्य बनाम भारत संघ और अन्य)

अभ्यर्थी का नाम और पता– हरीश चन्द्र पुत्र साधू शरण ग्राम व पोस्ट कटया जनपद बस्ती

राजनैतिक दल का नाम– भारतीय जनता पार्टी

(निर्दलीय अभ्यर्थी यहां ''निर्दलीय'' लिखे)

निर्वाचन का नाम– लोकसभा सामान्य 2024

निर्वाचन क्षेत्र का नाम– 61–बस्ती सामान्य

मै, हरीशचन्द्र (अभ्यर्थी का नाम), उपर्युक्त निर्वाचन के लिए अभ्यर्थी, सार्वजनिक सूचना हेतु अपने आपराधिक पूर्ववृत्त के बारे में निम्नलिखित विवरणों की घोषण करता हूँ।

(क) लंबित आपराधिक मामले

क्र. सं.	न्यायालय का नाम	मामले की संख्या एवं तारीख	मामले (मामलों) की स्थिति	संबंधित अधिनियमों की धारा (धाराएं) एवं अपराध (अपराधों) का संक्षिप्त विवरण
1	C.J.M./विशेष न्यायालय M.P.M.L.A. बस्ती	53/19 दिनांक 13.05.2019	अन्तिम रिपोर्ट पर प्रोटेस्ट/सुनवाई	147,323,504,506, I.P.C. नाजायज गोल द्वारा मारना, गाली देना, धमकी देना
	लागू नही होता	लागू नही होता	लागू नही होता	लागू नही होता
	लागू नही होता	लागू नही होता	लागू नही होता	लागू नही होता

(ख) आपराधिक मामलों के लिए दोषसिद्धि के मामलों के संबंध में विवरण

क्र. सं.	न्यायालय का नाम एवं आदेश (शो) की तारीख (खें)	अपराध (अपराधों) और अधिरोपित दण्ड का विवरण	अधिकतम अधिरोपित दण्ड
	लागू नही होता	लागू नही होता	लागू नही होता
	लागू नही होता	लागू नही होता	लागू नही होता
	लागू नही होता	लागू नही होता	लागू नही होता

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह

संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय

अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–

चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय–

आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय–

इलाहीबाग गोरखपुर।

मो09450567450 9336715406,

ई.मेलbhartiyabasti@yahoo.com

bhartiyabasti@gmail.com